अरविन्द कुमार त्रिपाठी
द्वारा
पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन





रीति, जातीय रस्म व लोकाचार
Social Etiquette Customs &Traditions

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

रीति, जातीय रस्म व लोकाचार **Social Etiquette Customs &Traditions**

अध्याय शीर्षक	रीति, जातीय रस्म व लोकाचार
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन/ **ISBN**	**978-93-5906-820-6**
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण/मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ/साभार/सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

Chapter Heading	**Social Etiquette Customs &Traditions**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi** **Village - Achharaund** **Banda - 210 001** **Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

रीति, जातीय रस्म व लोकाचार **Social Etiquette Customs &Traditions**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

रीति, जातीय रस्म व लोकाचार **Social Etiquette Customs &Traditions**

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – बान्दा क्षेत्र के रीति, जातीय रस्म व लोकाचार का संक्षिप्त वर्णन

रीति, जातीय रस्म व लोकाचार **Social Etiquette Customs &Traditions**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

कुलाचार

वास्तव में ''कुलाचार'' में वैयक्तिकता का तत्व अधिक प्रभावी होता है। इसलिए एक कुल तक सीमित आचार अपनी उपयोगिता के कारण कभी कभी लोक के लिए अनुकरणीय बन जाते हैं। रघुकुल की रीतियां आज तक समाज में आदर्श की प्रतिमान मानी जाती हैं। धार्मिक व्यक्ति धर्म पर आधारित होने के कारण व्यापक भूमिका अदा करते हैं। देशाचार में आन्चलिक प्रकृति, परिवेश और जलवायु का प्रभाव होता है। इसलिए वे एक अन्चल तक व्याप्त रहते हैं। सभी तरह के आचार समन्वित होकर एक अन्चल के लोकाचार बनते हैं और उनमें एक अवधि तक स्थिरता बनी रहती है। जो अधिक शाश्वत प्रकृति के होते हैं। वे परम्परा के अन्ग बनकर पारम्परित रुप में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक सन्चरित होते हैं, लेकिन जो अस्थाई प्रकृति के अनुपयोगी सिद्ध होते हैं, वे परिवर्तित या परिवर्द्धित होकर ही गतिशील हो पाते हैं। आन्चलिक लोकाचार अपनी सार्वदेशिक अस्मिता बनाकर अन्चल के बाहर प्रचलित हैं अन्चल धीरे धीरे राष्ट्रीय बन जाते है।। इस अन्चल को गर्व है कि उसके कुछ लोकाचार राष्ट्रीय मन्च पर प्रतिष्ठित हुए है।

रीति रिवाज व लोक–जीवन में निषेध

कुछ उदाहरण, जैसेः–

लड़की का पिता और उसके समतुल्य रिश्तेदार उस गान्व का या स्थान का पानी नहीं पीते हैं जहां उसकी कन्या का विवाह हुआ होता है, साथ ही भोजन भी नहीं करते हैं। समय के साथ इसमें भी काफी बदलाव आया और वर्तमान में बड़े शहरों में, कस्बों में, उस परिवार में भोजन नहीं करते जिस परिवार में लड़की कन्या की शादी हुई हो और वे उस परिवार के अलावा बाकी बाजार में भोजन कर लेते हैं।

पिता अपनी पुत्री की ससुराल का अन्न, जल ग्रहण नहीं करते। प्राचीन समय में यहाँ तक रिवाज था कि मुहल्ले या गान्व में पुत्री जिस जगह ब्याही हो तो उस जगह का लोग जल भी ग्रहण नहीं करते थे। धीरे धीरे, अब इस रीति में बदलाव आया है।

पहले गान्व बहुत छोटे हुआ करते थे, अतः पूरा गान्व एक परिवार होता था और जाति का कोई बन्धन नहीं था। किसी एक परिवार का दामाद, पूरे गान्व का दामाद माना जाता है, और पूरा गान्व उसे दामाद के समतुल्य सम्मान और भेन्ट देता था। उसके परिवार से आए पुरुषों की विदाई करते समय, हल्दी का टीका लगाते हैं और प्रमुख व्यक्तियों को नारियल भी भेन्ट करते हैं। अगर वह किसी के घर जाये तो उसे दामाद तुल्य मान कर सम्मान व भेन्ट दी जाती है।

समय के साथ गान्व बड़े हो गए, राजनीति कारों के वजह से गान्व जातियों में धर्मों में बन्ट गए और यह प्रथा लगभग खत्म होने के कगार पर आ गई है।

बान्दा व बुन्देलखण्ड क्षेत्र की पारिवारिक रीतियों में विशिष्ट रीति है– पुत्री नारी को सम्मानित करना। चाहे वह उम्र में छोटी हो या बड़ी। सभी वृद्ध छोटे–बड़े इस परिपाटी का पालन करते है। जैसे कुछ उदाहरण–

कन्या की विदाई बुधवार और बहुओं की विदाई गुरुवार को नहीं की जाती है।

यदि कोई व्यक्ति घर के बाहर किसी काम से जाता है, तो नवें दिन घर लौट कर नहीं आता है।
नया कपड़ा बुध, बृहस्पति या शुक्रवार को पहने।

शनिवार को तेल लेना निषेध है।

अस्थि फूल सिरा (विसर्जित) कर घर को रविवार, बुधवार नहीं लौटा जाता।

रात्रि में दाह सन्स्कार करना मना है।

दूध और अग्नि पर पान्व पड़ना अशुभ माना जाता है।

प्रातः काल पानी के छीटें पड़ना अशुभ माना जाता है।

रीति, जातीय रस्म व लोकाचार **Social Etiquette Customs &Traditions**

भोजन चौका में ही करते हैं। चौका कच्चा होता है, उसे गोबर या मिट्टी से लीपा जाता है। भोजन करने वाला यथा योग्य लकड़ी के पाटा, जूट के बोरे या चटाई पर बैठकर भोजन करता है। थाली को लकड़ी के पाटा पर रखते हैं। भोजन करने से पहले भोजन करने वाला व्यक्ति थाली के चारों ओर पानी का वृत बनाते हैं और अछूता निकाला जाता है। अछूता में एक रोटी पर थाली में परोसे गए सभी पदार्थों की थोड़ी–थोड़ी मात्रा निकालकर उसे गाय, कुत्ते को खिलाने हेतु अलग निकाल कर रख देते हैं। भोजन करने के पश्चात भोजन को नमस्कार किया जाता है और अन्न व भोजन बनाने वाले के प्रति आभार व्यक्त किया जाता है। हाथ बाहर जाकर धोए जाते हैं। कहीं–कहीं विशिष्ट क्षेत्रों में थाली में ही हाथ धो दिए जाते हैं जिसे घर की स्त्रियां उठाकर धोने वाले स्थान पर रख देती हैं।

सुहागिन महिलाएं मान्गलिक कार्यों या सुहागलों की पूजा में महावर लगाकर जाती हैं। महावर एक लाल रन्ग है।

महावर लगाने के पश्चात और चूड़ियां पहनने के बाद, महिलाएं अपने बुजुर्ग स्त्रियों या रिश्ते में बड़ी स्त्रियों के पैर छूती हैं तथा कुंवारी/कुंवारी कन्याओं के भी पैर छूती हैं।

पूजन को ''होम दैवो'' कहा जाता है। ''करइया सिराबे'' में पान्च सुहागलें की जाती हैं अर्थात् पान्च सुहागिन स्त्रियों को चार–चार अठवाईं या चार–चार बरा दिये जाते हैं।

सन्करे (जूठे) हाथों छूने से उपवास खन्डित हो जाता है।

ग्रामीण घरों व क्षेत्र में अपने से ज्यादा उम्र के लोगों का नाम नहीं लिया जाता है। साथ ही जो रिश्ते में बड़े होते हैं, उनका भी नाम नहीं लिया जाता। इसमें जाति कहीं भी प्रतिरोध या गतिरोध नहीं करता। जाति को एक तरफ रख कर केवल उम्र का लिहाज किया जाता है और उसमें सभी लोगों को कक्का दादा–दादी भवजी चमार कक्का, बसोर दादा, लुहारिन भौजी या इसी तरह के सम्मान पूर्वक शब्दों का उपयोग कर उनको बुलाया जाता है। यदि एक ही उम्र के बहुत सारे लोग उपलब्ध हो तब सम्भवतः रिश्ते के साथ जाति का नाम भी लगा लिया जाता है जैसे बसौर दादी, लोहारी भवजी, चमार कक्का आदि आदि।

गान्व में जब किसी की बेटी या बहू की विदा होकर गान्व आती है तब उस कन्या के साथ ''डलिया'' आती है। इस डलिया में खाने योग्य बने हुए स्वादिष्ट पकवान, जो सूखे होते हैं, भरे होते हैं। उसको प्रिय जनों के परिवार में नाई या उसकी पत्नी नाइन के द्वारा बन्टवा दिया जाता है। यह सम्बन्धों में प्रगाढ़ता बढ़ा देती है।

किसी भी मान्गलिक कार्यों या शोक के क्षणों में, नाइन या नाई/नाउ घर के आगे बुलावा लगाकर न्योता/निमन्त्रण दिया जाता है। क्योंकि सारे अवसर सामाजिक कार्य थे, अतः पूरी बेलना, रोटी बनवाना, फुलका दिलवाना, लकड़ी काटना, मिट्टी लाना, बहू को रोटी छुलवाना आदि जैसे सामान्य कार्यों में भी बुलावा/बुलौआ लगता है।

यदि किसी परिवार में गाय या भैंस बच्चे को जन्म देती है, तो उसका पहले या दूसरे दिन का दूध जिसे तेली/तेलू भी कहा जाता है, अपने घर व्यवहार के परिवारों में व्यवहार स्वरुप बान्टा जाता है।

यद्यपि समाज व्यवस्था के अनुसार, किसी का भी पुनर्विवाह अमान्य है, लेकिन फिर भी यदि कोई व्यक्ति समाज व्यवस्था के विरुद्ध जाकर पुनर्विवाह कर लेता है, तो उसे समाज व्यवस्था के अनुसार कुछ दन्ड, धार्मिक दन्ड स्वरूप समाज के लोगों के सामने गौदान करना होता है। वह सत्यनारायण की कथा कराकर, समाज को भोजन कराता है। इसे बछिया कहते है।

सन्ध्या काल में दीपक, लालटेन या किसी अन्य साधन को जलाते समय, प्रकाश को सिर झुका कर अथवा छूकर नमन करते हैं।

मार्ग में कहीं भी जाते समय यदि कोई शव मिले या शव यात्रा मिले, तो एक क्षण के लिए उसके सम्मान में पथिक रुक जाते हैं तथा उसको प्रणाम करते हैं। सात कदम साथ चलने के बाद माना जाता है कि उसके साथ हमारा सम्बन्ध है और यह उसके प्रति सम्मान भी है। आवश्यक नहीं है कि यह प्रथा सभी क्षेत्रों में हो।

महावर लगाने के पश्चात और चूड़ियां पहनने के बाद, महिलाएं अपने बुजुर्ग स्त्रियों या रिश्ते में बड़ी स्त्रियों के पैर छूती हैं तथा कुंवारी/कुंवारी कन्याओं के भी पैर छूती हैं।

नवदुर्गा की अष्टमी को कुंवारी कन्याओं को, जिन्हें देवी का स्वरूप माना जाता है, यथासम्भव अपने सम्पन्नता के अनुसार खीर खिलाती हैं, कोई भोजन भी करा देता है। उनके पैर छूकर उन्हें फल तथा दक्षिणा, जिसमें पैसे रुपए या अन्य वस्तुएं होती हैं, दी जाती हैं।

दशहरे पर सपरिवार एक दूसरे के घर मिलने जाते हैं। जिस परिवार से मिला जाता है वह परिवार जलपान करा कर तथा पान खिला कर विदा करता है। यदि आर्थिक रूप से सम्पन्न नहीं हैं तो केवल पान चूना, सुपारी, कत्था, इलायची और अगर तम्बाकू खाने वाला है तो तम्बाकू लगाकर एक पान तैयार किया जाता है और उसे सद्भाव के साथ प्रस्तुत किया जाता है। आगन्तुक/अतिथि उसे सम्मान से प्राप्त करता है और अगले परिवार से मिलने चला जाता है। बान्दा शहर में दशहरा 5 दिन तक, पान्च क्षेत्रों में मनाया जाता है। जिस क्षेत्र में या मोहल्ले में दशहरा मनाया जाता है, उसे छोड़कर बाकी दूसरे चार क्षेत्रों के लोग, जिस क्षेत्र में दशहरा मनाया जा रहा है, में मिलने जाते हैं। इस तरह से 1 दिन में एक क्षेत्र में दशहरा मनाता है और सभी लोग एक दूसरे के अवश्य ही मिल जाते हैं। अगर केवल 1 दिन ही मनाया जाता तो सम्भवत सभी एक दूसरे का अपने घर में बैठकर इंतजार करते और कोई भी किसी के घर ना जाता। एक प्रश्नवाचक पहेली बनती कि कोई भी मेरे यहां नहीं आया।

ग्रामीण क्षेत्रों में टोटके के रिवाज होते हैं। तन्त्र–मन्त्र पर विश्वास रखने वाले ग्रामवासी रोगों को दूर करने, प्रसव पीड़ा न होने, और तुरन्त प्रसव होने, बच्चे को नजर न लगने, बच्चा न होने पर तन्त्र–मन्त्र अथवा टोटका करते हैं। इनकी अपनी अलग रीतियाँ होती हैं। प्रत्येक अन्चल अपने लोकाचार द्वारा उन्हें ढाल लेता है।

विवाह सन्स्कार की कुछ रीतियाँ भी अद्भुत हैं जैसे सुतकरा जाने के बाद कन्यापक्ष का व्यक्ति अन्त्येष्टि अशुभ कार्यों में सम्मिलित नहीं होता है। कन्या तथा वर तालाब, नदी, कुँए पर स्नान करने नहीं जाते हैं। विवाह की सामग्री को पूजा के पहले छूना गान्वों में वर्जित है।

<u>बान्दा व बुन्देलखण्ड क्षेत्र के लोक जीवन के बारे में कुछ बातें:</u>

बान्दा व बुन्देलखण्ड क्षेत्र में कई तरह के लोक नृत्य प्रचलित हैं, जैसे कि बधाई, राई, बरेदी, सैरा, कानड़ा, ढिमरयाई, और नौरता नृत्य। इन नृत्यों में कई तरह के गीत गाए जाते हैं।

बान्दा व बुन्देलखण्ड क्षेत्र में लोक साहित्य की समृद्ध परम्परा है। यहां लोकगीत, लोकगाथाएं, लोककथाएं, और लोकसुभाषित (कहावतें, मुहावरे, और पहेलियां) जैसे कई तरह के साहित्य मौजूद हैं। बान्दा व बुन्देलखण्ड क्षेत्र के प्रमुख लोक गीतों में हरदौल, पन्वारा, ईसुरी फाग, और आल्हा शामिल हैं।

बान्दा व बुन्देलखण्ड क्षेत्र में लोक कला के क्षेत्र में नृत्यशालाओं की स्थापना कराई गई थी। इन नृत्यशालाओं में नृत्यों का प्रशिक्षण भी दिया जाता था।

बान्दा व बुन्देलखण्ड क्षेत्र में लोक कला में प्रकृति का चित्रण धार्मिक महत्ता के साथ–साथ अलन्करण के लिए भी किया जाता है।

बान्दा व बुन्देलखण्ड क्षेत्र में समय–समय पर गान्व या शहरों में दन्गल–कुश्ती भी आयोजित की जाती है।

बुन्देली लोक जीवन में अधिकतर शुभकार्य उत्तरायण तथा पन्डितों से मुहूर्त निकलवा कर किये जाते हैं। पर्वतों, नदियों, सरोवरों, और वृक्षों की पूजा की जाती है। पीपल, बरगद, नीम, आंवला, तुलसी, केला, बेलपत्र आदि वनस्पतियों को पूज्य कोटि में रखा गया है।

अन्धविश्वास से सम्बन्धित प्रथाएं

प्रथाएं– रीति रिवाज

रीति, जातीय रस्म व लोकाचार **Social Etiquette Customs &Traditions**

बान्दा क्षेत्र की स्त्रियां और अगर इन्हीं क्षेत्र को और बड़ा किया जाए तो सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड और क्षेत्र के हिसाब से लगभग सम्पूर्ण विश्व में स्त्री और पुरुष धर्मानुसार अन्धविश्वास से घिरे रहते हैं। चाहे जो कारण हो स्त्रियां अन्धविश्वास के क्षेत्र में कुछ ज्यादा ही आगे हैं। सभी किसी भी कार्य को करने के लिए पहले शकुन और अपशकुन पर विचार करते हैं। खाली घर देखना अभी एक अन्धविश्वास है और कोई इसे पसन्द नहीं करता। ठीक इसी तरह यात्रा के समय या घर बाहर निकलने के पश्चात काणे व्यक्ति(एकाक्षी) का दर्शन अशुभ/अपशकुन माना जाता है जबकि नीलकन्ठ नामक पक्षी के दर्शन करना शुभ मानते हैं। जब खपरैल या छत पर कौवा आकर बैठ जाए और बोले तो परिवार को यह आभास होता है कि आज अवश्य ही कोई अतिथि उनके घर में आने वाला है। लगभग विश्व के सभी सम्प्रदायों में इस तरह के अन्धविश्वास हैं, तो बान्दा व बुन्देलखण्ड क्षेत्र की जमीन इस से कैसे बच सकती है। स्त्रियां यहां अपने बच्चों के माथे व आन्ख में काजल लगाती हैं जिसे काजल जगाना बोलते है। कमर में काला धागा पहनाते हैं और मुस्लिम धर्म से प्रभावित स्त्रियां ताबीज भी पहनाती हैं। इस क्षेत्र की स्त्रियों में झाड़—फूंक पर ज्यादा विश्वास है और सबसे पहले उसी का सहारा लिया जाता है। परिवार में जब कोई बच्चा बीमार पड़ता है और दूध नहीं पीता या कोई बीमारी लगती है तो सबसे पहले उस बच्चे की नजर उतारी जाती है। कहते हैं सुन्दर स्वस्थ स्वस्थ बच्चे को जब कोई टेढ़ी या तिरछी निगाह से देखता है तो उस पर नजर लग जाती है। उस बच्चे की नजर उतारने के लिए नींबू और मिर्च से टोना टोटका करती है। डन्ठल के साथ लाल साबुत मिर्च लेकर 7 बार उसके सिर के ऊपर घुमाकर आग के ऊपर डालते हैं, अगर उसमें से कोई महक या धसक नहीं निकले तो कहा जाता है कि इसे नजर लगी है। अगर उसमें से कोई महक या धसक निकले तो कहा जाता है कि इसकी नजर उतर गई है। कुछ विशेष दिनों में कहते हैं कि यह ज्यादा लाभकारी है दो—तीन बार नजर उतारने के बाद मिर्चों को जलाने पर उसमें से मिर्च की कड़वाहट हवा में फैल जाती है और माना जाता है कि नजर उतर गई है और यह काफी हद तक काफी प्रभावशाली भी माना गया है। बच्चे के बड़ी या छोटी देवी/माता निकलती है, तो चाहे कारण कोई भी रहा हो, आज भी दवा ना करके देवी धारने(देवी पर तेल/पानी डालना) जाती हैं और देवी में चढ़ाया हुआ तेल बच्चे को लगाती हैं। काले कुत्ते को गुलगुले (आटे में गुड़ मिलाकर बनाया गया पकौड़ा) खिलाती है। पीपल एवम् बरा (बरगद) के नीचे दिए जलाने जाया करती है, वृक्ष की परिक्रमा लगाती है। शनिवार का दिन विशेष प्रभावशाली माना गया है। सड़क या घर के आसपास जब कोई कुत्ता रोता है, तो यह माना जाता है कि कोई बुरी घटना होने वाली है। कारण कुत्ते के रोने का चाहे कोई हो— जैसे उसको लगी हुई चोट के कारण अत्यधिक दर्द हो, अथवा कैद में रहने की दुख। जब किसी के घर में किसी की मृत्यु हो जाती है तो उस समय अनेक प्रकार के प्रथाएं रीति रिवाज परिवार में होते रहते हैं। मृतक व्यक्ति के लिए औरतें रोती हैं और नजदीक के सरोवर में स्नान करने के लिए जाते हैं। मृत्यु दिवस में यह लोग अपने परिवार के लिए कड़ भात/ कढ़ी चावल बनाते है। यदि किसी विवाहित पुरुष की मृत्यु होती है तो विवाहित पुरुष की पत्नी की चूड़ियां तोड़ दी जाती हैं और उसे मान्ग भरने की इजाजत नहीं दी जाती है। उसको एक नया नाम ''विधवा'' दे दिया जाता है। मृतक की शुद्धता जिस दिन होती है उस दिन भोजन का पहला थाली/पत्तल मेहतर के लिए निकाल लिया जाता है। आने जाने वाले रिश्तेदारों के सामने स्त्रियां फूट फूट कर रोती हैं।

सती प्रथा

सती प्रथा बहुत ज्यादा पुरानी प्रथा नहीं है। विधवा स्त्री को आक्रान्ताओं से अपनी इज्जत बचाने के लिए सम्भवतः इस प्रथा को अपनाया होगा। किसी भी धर्म या धार्मिक प्रथा में सती प्रथा का विवरण नहीं है। विदेशी विशेष रुप से मुगल आक्रान्ताओं के समय उनकी नेक्रोफिलिया* आदतों से अपने को सुरक्षित रखने के लिए या दूसरे की क्रूर दृष्टि से बचने के लिए इस प्रथा को अपनाया गया या प्रथा शुरू हो गई होगी। अन्ग्रेजों के समय में 4 दिसम्बर 1829 को नियम लाकर इस प्रथा को कठोरता के साथ बन्द किया गया। इस क्षेत्र में भी कुलीन जाति की स्त्रियां अपने पति के साथ जलकर पति के साथ दाह सन्स्कार में जलकर सती हो जाया करती थी। जो स्त्रियां सती हो जाती थी उन्हें देवी का रूप माना जाता था। राजस्थान में तो इस तरह के बहुत मन्दिर मिलते हैं। मरणोपरांत या कहें सती होने के उपरान्त उस दाह सन्स्कार वाली जगह पर एक चबूतरा बना दिया जाता था, जहां पर व्यक्ति बड़ी श्रद्धा से माथा टेकते थे और वरदान मान्गते थे। धन्य हो ब्रह्म समाज के सन्स्थापक राजा राम मोहन राय महाशय का जिन्होंने सती प्रथा को समाप्त किया।

देवी देवताओं का सिर पर सवार होना

अनेक औरतों को नवरात्रि के अवसरों पर अथवा किसी भी समय या विशेष अवसरों पर देवी उपासना के समय या अन्य किसी कारण से, देवी सिर पर सवार हो जाती थी अथवा बरम देवता या ग्रामीण देवता दिमाग में समा जाते थे। इस विशेष अवसर पर जिस पर देवी या देवता सवार होते थे, विशेष प्रकार की मुद्राएं बनाया करती हैं और आज भी यह प्रचलन में है। विभिन्न मुद्राएं बनाने के साथ अन्ड बन्ड (उल्टा सीधा) बोलना/बकना शुरु कर दमती थी। यह आश्चर्य की बात है कि यह देवी देवता केवल स्त्रियों के ऊपर ही आया करते हैं। सम्भवतः यह

एक मनोवैज्ञानिक कारण भी है। घर के एकान्त में केवल सोचते रहना, सोचते रहना, सोचते रहना और उसका अगर मन से अभिव्यक्ति ना हो पाई तो यह एक डिप्रेशन की अवस्था भी हो जाती है और उस अवस्था में कुछ इस तरह की अवस्था हो जाती है। यदि यह अवस्था घर के अन्दर हो तो उसे गान्व के बाहर रहने वाले किसी बाबा साधु के यहां आश्रम में ले जाते हैं और उसके आश्रम तक पहुंचते–पहुंचते वह लगभग ठीक होने लगती है। खुला आकाश, ताजी हवा, जगह का परिवर्तन उसके ठीक होने का कारण हो लेकिन बाबा का आशीर्वाद माना जाता है और अगर यह घर के अन्दर कुमारी लड़की को हो तो कहा जाता है कि जितना जल्दी हो इसकी शादी कर दी जाए। हो सकता है कि यह दबी हुई इच्छाओं का एक प्रकटीकरण हो। जो भी है, सुविधाएं केवल बड़े लोगों के पैसे समृद्धिशाली लोगों के लिए होती है। गान्व भी, अगर दूरदराज के हैं, तो पैसे कमाने वाले डॉक्टरों, सरकारी अफसरों, कर्मचारियों को वहां तक जाने की कोई फुर्सत नहीं है। जाने में अनजान जगह दर्द महसूस होता है। और गरीबों का दर्द देख कर अनजाना सुख मिलता है। सरकार अगर कोई चिकित्सालय खोल भी दे तो लोगों की मानसिक विकृति के कारण, ईमानदारी से काम करना एक अपराध है। अतः वह गान्व के, वह भी दूरदराज के, जान क्या है, आप समझते हैं? और यह अन्धविश्वास कायम रहता है। अपने को पढ़ा–लिखा समाजसेवी, समाज सुधारक, और तथाकथित पुरस्कार पाने वाले, केवल शहर में बैठकर एशो आराम करते हुए दो चार पन्क्तियां लिखकर अपने प्रभाव प्रादुर्भाव से पुरुस्कार पाकर खुश हो जाते हैं। दूर–दराज के गान्व आदिवासियों की परिस्थितियां सदियों से और आज तक बिल्कुल वैसी ही हैं जैसा सोचा भी नही जा सकता है। ग्रामीण अन्चल से ज्यादा बाहरी अन्चल के लोग, इस विशेष अवसर पर जिस पर देवी या देवता सवार होते है, देवी से वरदान मान्गा करते हैं। देवी किसी के भी सिर पर आई हैं, उसे प्रत्यक्ष देवी भी माना जाता है। नारियल एवम् बकरे की बलि चढ़ाने से देवी उतर जाया करती हैं। कुछ औरतों को भूत प्रेत भी सवार हो जाया करते था/है। जिन को शांत करने का कार्य तान्त्रिक और ओझा किया करते हैं। यह प्रचलन दूरदराज और जन्गलों के बीच ग्रामीण अन्चलों में आज भी है।

जो तीज त्यौहार होते हैं उनमें किसान नई चीजें खरीद कर अपनी खुशी को जाहिर करता है। देखा जाएं तो तीज त्यौहार ही समय के साथ हर वर्ग के लिए बनाए गए है। उन त्योहारों के जिनमें जाति विशेष सन्लग्न हो उदाहरण स्वरुप– भडभूजा, कुम्हार, बढइ, लोहार, सुनार, दर्जी, मिस्त्री, अध्यापक, दोकानदार, शिल्पकार, हलवाई, नट, कलाकार, गायक आदि। धनतेरस धातु का व्यापार करने वालों के लिए और इसी तरह के अन्य जितने भी त्यौहार है जो आगे बताए जाएंगे, में अलग–अलग प्रजातियों के लोगों के द्वारा बनाए गए उपज के खरीद बेच में शामिल होते हैं। दीपावली मिट्टी कुम्हारों के द्वारा बनाए गए सामान का प्रचार प्रसार, कपड़े बुनकर दर्जिनों के द्वारा नए कपड़े सिलने का माद्दा और सबसे ज्यादा खुशी वकीलों के द्वारा किसानों के बीच में लड़ाई पैदा कर आना और पैसा इकट्ठा करना।

पर्दा सम्बन्धी आवश्यकता

करीब 2000 साल पहले तक स्त्रियां और पुरुष के अधिकार बराबर थे। कोई एक दूसरे से कम नहीं था। लेकिन मुस्लिम आक्रान्ताओं की उनकी नेक्रोफिलिया˙ आदतों के कारण जब मुस्लिम आक्रान्ता, स्त्रियों को खासतौर से सुन्दर स्त्रियों को उठाकर ले जाने लगे तो अपनी सुन्दरता या उम्र को छुपाने के लिए पर्दा प्रथा शुरू हो गई। यह पर्दा प्रथा, चाहे किसी भी जाति में है, काफी प्रचलित है और इस पर जोर भी दिया जाता है। यह प्रथा विशेषकर क्षत्रिय ब्राह्मण क्षत्रियों में है। वैश्य, शूद्र जाति की स्त्रियां पर्दा कम या न के बराबर ही करती हैं या कम करती है या फिर विशेष अवसरों पर ही करती है।

महिलाओं में घून्घट प्रथा का जबरदस्त प्रचलन मुस्लिम आक्रान्ताओं के आने के बाद से शुरू हो गया था। सन्युक्त परिवार होने की वजह से पति–पत्नी दिन में तो क्या– रात, सप्ताह और पखवारों तक बात नहीं कर पाते क्योंकि सन्युक्त परिवार में, परिवार के सभी सदस्य एक दूसरे के आस–पास रहते हैं। रात्रि में भी सभी पुरुष एक घर में या बाहर की तरफ और महिलाएं दूसरे घर में बच्चों के साथ रात्रि विश्राम करते हैं। यही कारण है कि नव्या या पुरातन दम्पति को प्रेम मिलन के लिए लम्बी प्रतीक्षा करनी पड़ती है। जब अन्य लोग सो जाए तब वे चुपके से उठकर और प्रेमालाप करते है। इस प्रतीक्षा पथ में भी अनेक व्यवधान होते हैं।

कुछ जातियों में विशेषकर घुमक्कड़ जैसे गुर्जर समाज में घून्घट प्रथा का प्रचलन अपेक्षाकृत अधिक है। कुछ गान्वों में सम्पन्न परिवार की स्त्रियां जब कभी रास्ते से निकलती है तो कपड़ा तानकर पर्दे लगाए जाते हैं। यह केवल जमीन्दार लोगों के दिखावे हैं।

कुछ स्त्रियां घर के बाहर और भीतर गृहस्थी के काम करती हैं, इसलिए उनका प्रबन्धन बहुत अच्छा रहता है। फिजूलखर्ची और नुकसान नहीं होते हैं या कम होते हैं। कायस्थ (लाला) जाति की स्त्रियां, क्षत्रियों के समान पर्दों में रहती हैं। कहीं भी आने–जाने के लिए लम्बी चौड़ी चादर से अपने सम्पूर्ण शरीर को, मुसलमान स्त्रियों के बुर्के की

समान लपेटकर, मार्ग में अपनी हैसियत के अनुसार पैदल या बैलगाड़ी या पालकी में चलती है। साधारण स्थिति की क्षत्रिय कुल की कोई भी स्त्री अन्य गान्व जाने के लिए अगर घर में वाहन है तो वाहन द्वारा ही यात्रा कर लेती हैं अन्यथा पैदल ही यात्रा करती है। शूद्र जाति की स्त्रियां पर्दा नहीं करती है। वे अपना सब काम करती हैं। वैसे घून्घट निकालने की प्रथा सभी जातियों में है। रिश्तो में बड़े, बुजुर्ग, मान सम्मान वाले व्यक्तियों के आगे शूद्र भी अभी भी सदा घून्घट काढ़े/निकालने की प्रथा है। बड़े बुजुर्ग, मान सम्मान में उस रिश्ते वाले और इसी तरह बाहरी लोगों और सम्बन्धियों के सामने भी सभी घुन्घट निकालती हैं और उनके सामने नहीं आती या निकलती है।

खेल सम्बन्धित रीति रिवाज

खेती समाप्त होने के पश्चात और अगली खेती शुरू होने से पूर्व, जब कोई विशेष काम नहीं होता है, तब पुरुष चौपालों में चबूतरों पर बैठकर चौपट, गोटपड़ा, जूज आदि खेलते हैं। महिलाएं चन्दापौआ या चपेटा खेलती है। बालक गुल्ली डन्डा आदि खेल कर अपना समय व्यतीत करते है। इसके अलावा भी और बहुत सारी क्रियाएं हैं, जिनका विस्तार से वर्णन आगे किया जाएगा। बच्चे खेल खिलौने स्त्रियों के द्वारा स्वयम् का शिल्प कार्य भी मनोरन्जन का एक साथ साधन है।

<u>रीति रिवाज– स्त्री और पुरुष</u>

बान्दा व बुन्देलखण्ड क्षेत्र पूरे परिक्षेत्र में लगभग 44प्रतिशत स्त्रियां निवास करती है। कहने का अर्थ है 100 पुरुषों पर 88 स्त्रियां जो कि एक सामान्य और अच्छा अनुपात है। पहनावे और लोक आचरण की दृष्टि से स्त्री और पुरुष दोनों की पहचान काफी भिन्न है व और अलग–अलग देखी जा सकती है। इसके अलावा स्त्रियों में भी बच्ची, कुमारी और विवाहित स्त्रियों की पहचान भी अलग ढन्ग से होती है और उन्हें दूर से ही पहचाना जा सकता है। कुंवारी/कुमारी कन्याओं के वस्त्र एवम् आभूषण अलग ढन्ग के होते हैं। जन्म से लेकर 12 वर्ष की अवस्था तक ही कुंवारी कन्या मानी जाती हैं। इन्हे रजस्वला होने से पहले देवी माना जाता है। वर्तमान समय में नियम बनने के पश्चात से 18 साल तक की या जब तक शादी ना हो कन्या कुंवारी ही मानी जाती है। कुंवारी अर्थात अक्षत कौमार्य। इनका पहनावा शादी होने तक नहीं बदलता है। कुमारी स्त्री का पहनावा चप्पल, लहंगा, चुनरी आदि होते थे, किन्तु वर्तमान युग में रेडियो व टीवी के कारण नए प्रकार के वस्त्र धारण करने लगी है। कुंवारी कन्याओं को देवी का स्वरूप माना गया है और यह अवस्था केवल 12 वर्ष या रजस्वला होने तक की है। इसी देवी स्वरूप के कारण उसके चरण–स्पर्श सभी लोग करते हैं। उम्र का इसमें कोई भी बन्धेज नहीं है चाहे वह 100 साल का वृद्ध हो अथवा नवविवाहित नव्या स्त्री। नवरात्रि के अवसर पर कन्या भोज कराने का अवसर और रिवाज है। इस अवसर पर कन्या को टीका लगाना, उपहार देना, पैर छूना आज भी शुभ माना गया है और देवी के द्वारा आशीर्वाद प्राप्त माना जाता है। विवाह के अवसर पर भी भंवर पड़ना व भंवरी पढ़ने के पूर्व तक उसे कुंवारी कन्या ही माना जाता है तभी तो सभी लोग उसके पैर छूते हैं। क्षेत्र विशेष की विशेषता है कि देवी स्वरूप होने के कारण उसे कोई कुदृष्टी से नहीं देखता और बड़ी श्रद्धा के साथ देखा जाता है, यही कारण है कि लड़कियों के साथ इस क्षेत्र में कुकर्म, यौन अपराध व अन्य चीजें बहुत बहुत कम है।

बान्दा क्षेत्र या कहें पूरे बुन्देलखण्ड में कन्या जन्म पर खुश न होना, एक प्रचलित रीति है। मुसलमानों द्वारा स्त्रियों पर अत्याचार व कुदृष्टि ही मुख्य कारण रहा है। अन्य क्षेत्रों की तरह, यहां भी कन्या जनने पर विशेष खुशियां नहीं मनाते और किसी किसी क्षेत्र में ऐसा भी अवसर आया है कि उन्हें नीचा न देखना पड़े इसलिए कन्या को जन्म होते ही कन्या वध कर देते हैं। यह अल्प अवसरों पर ही है। लेकिन सामाजिक सुधार के कारण अब कन्या वध कहीं नहीं होता, लेकिन कन्या वध के तरीके बदल गए हैं आधुनिक मशीनों के द्वारा भ्रूण जान्च और उसके पश्चात गर्भपात का काफी समय तक प्रचलन रहा है।

विवाह और विवाह से सम्बन्धित रीति रिवाज

कुछ समय पहले तक लड़कों के विवाह में 15 वर्ष और लड़कियों के विवाह में 12 वर्ष की उम्र मानी जाती थी और विवाह भी हो जाते थे, लेकिन सामाजिक बदलाव को देखते हुए यह उम्र 18 और 21 साल हो गई है। विभिन्न कार्यों के लिए उम्र अलग–अलग निर्धारित की गई है। विवाह में और उसको सम्पन्न कराने में लगभग सभी जातियां सम्मिलित होती हैं और सहयोग करती है। नाई, पन्डित पुरोहित विवाह कराने में मुख्य होते हैं। इस तरह, बहुत से सम्बन्ध होने में धोखे व नुकसान जाते थे/हैं। इसीलिए अब प्रायः घर का एक या दो व्यक्ति स्वयम् जाकर लड़के को देखते हैं, परिवार की देखभाल व जान्च करते हैं और फिर विवाह सम्पन्न होता है। यह सब परिस्थितियां समाज के द्वारा खाए गए धोखे को दूर करने में एक कदम अग्रसारित है। समय के साथ समाज सीखता जाता है, फिर

भी मध्यम स्थिति वाले अभी भी चेते नहीं हैं और विशेष ध्यान नहीं देते। विवाह के समय जो रीति रिवाज हैं, वे सामान्य समय के साथ आए परिवर्तनों को छोड़ दें, तो अभी कमोबेश रीति रिवाज अभी भी वही हैं जो पुरातन समय से चलते चले आ रहे हैं। विवाह के समय किसी भी रीति अवसर का बुरा नहीं माना जाता रहा है। विवाह में कई जगह ऐसा भी अवसर आता है जिसमें स्त्रियां वर पक्ष को इंगित करते हुए अश्लील गीत गाती है। बारातियों तथा मेहमानों पर रन्ग डाला जाता है उनके हाथ पैर लाल रन्ग/महावर से रन्गे जाते हैं। कुछ लोग यह न होने पर स्त्रियों को उकसाते भी हैं ताकि वे गाना गाए, (आशय अश्लील गाने का है), उनके हाथ पर रन्गने और कपड़ों पर रन्ग डाले। यह केवल स्त्री/वधु पक्ष में ही नहीं, पुरुष/वर पक्ष में भी घर की स्त्रियां मनोरन्जन करती है। पुरुष/वर पक्ष में घर की स्त्रियां मनोरन्जन हेतु बाबा का स्वान्ग करती है। यह स्वांग लड़के के बारात जाने के पश्चात घर में किया जाता है। इसका दूसरा पहलू चोर उचक्कों को घर में पुरुषों के न रहने पर बचाव भी है। इतना सब कुछ होने के बाद भी विधवा का इन अवसरों पर स्वागत नहीं होता है।

विधवा से सम्बन्धित रीति रिवाज

विधवा स्त्री से सम्बन्धित कुछ जातियों में विशेषकर राजपूत, कायस्थ, बनिया और ब्राह्मणों में विधवाओं के विवाह नहीं होते है। अन्य जातियों में काफी हद तक किया जाना सम्भव है। रखैल रखना, वेश्याओं के यहां जाना और अन्य रिवाज पुरातन काल से और आधुनिक काल तक चल के चले आ रहे है। चाहे उनका नाम बदल दिया गया है या बदल गया है। रखैल शब्द या लिव इन रिलेशन, समय–समय पर प्रेमी बदल लेना क्या है? पुराने समय के कई विवादों का, चाहे उन्हें कोई भी नाम किया जाए, इसके अलावा अन्य अपरोक्ष रूप से रखैल ही कहलाती थी। विवाहिता है तो भी यह सब अवस्थाएं, पैसे वाले व जमीन्दार लोग ही करते हैं। जागरूक होने के कारण अभी भी, वर्तमान समय में इस तरह के परिवार कम होते जा रहे हैं या यही कि किसी अन्य नाम से शुरु हो चुकी है या जाना जाता है। घर में काम कर रहे बाहर की स्त्रियां जैसे नौकरानी, बर्तन मान्जने वाली अन्य काम करने वाली नौकरानी के साथ जमीन्दारों और धनवान व्यक्तियों के सम्बन्ध हो जाते हैं। नौकरानी, बर्तन मान्जने वाली अन्य काम करने वाली नौकरानियों की घर की परिस्थितियां, सामाजिक व आर्थिक कारण, मालिकों का रसूख भी उन्हें मजबूर कर देती है। इसीलिए कहावत है किः–

राजा का पुत्र पानी भरता है और ढीमर का का लड़का राज्य करता है।

जन्म की रस्में

सम्बन्धित बालक के जन्म होने पर सबसे पहले नाइन और फिर बसोरिन का काम होता है। लड़का होने पर भूत प्रेत भगाने को थाली बजाते हैं व कुछ लोग इसको खुशी प्रदर्शित करने का एक साधन मानते हैं। राई, अजवाइन, नमक, गन्धक, भूसी और बगल का बाल लेकर नजर हटाने के लिए राइनो उतारते है। अन्धविश्वास है लेकिन पुरातन काल से चला आ रहा है। जन्म के समय बालक को जन्म देते ही करते हैं। 10 दिन सोहर रहती है और चौकी में पटाखे और सम्बन्धों के चलते बन्दूक चलाते हैं।

महिलाओं का पूर्ण सन्सार रसोई से आन्गन तक सिमट जाता है। भोजन बनाने से लेकर अन्य गृहस्थी के कार्यों में उनका दिन व्यतीत होता है। पुरुष खेत खलिहान में चले जाते हैं। फुर्सत के समय घर के बाहर सनई, मूंज़ और डांव से रस्सिया, जाजम, सलिता आदि बनाते हैं। प्रत्येक ग्राम में एक या दो दुकानदार अवश्य मिलता है जो दैनिक आवश्यकताओं की चीजों को बेचते हैं। शिल्पी अपने घर या दरवाजे के बाहर अगर जगह कम है तो, शिल्पकार्य में दिन काट देतें है। प्रत्येक घर में गन्गाजल रखना तथा विभिन्न अवसरों पर उसे छिड़ककर शुभ करना शुद्ध करना शुभ मानते हैं।

अतिथियों का सम्मान, आगमन पर पानी के साथ गुड़ की भेली/ढेली से होता है, इसी को मिठाई भी कहते हैं। कहीं–कहीं पानी में शक्कर (चीनी) तथा काली मिर्च घोलकर मिर्चवाणी या मिरच्यानूं पिलाने की परम्परा है। यह देसी शरबत होता है। कुछ समृद्ध लोग चीनी और पानी का घोल मिलाकर उसमें पुदीना का हरा रस भी मिला कर देते हैं। यह आने वाले का स्वागत है।

श्रमिक वर्ग का पूरे साल के आशा का महीना चैत होता है। इसी माह, खेतों में फसलों की कटाई प्रारम्भ होती है। खेतों और खलिहान में कार्यरत पुरुषों की पत्नियां और बच्चे घर से भोजन की पोटली और पानी लेकर आ जाते हैं। जिनके गाय होती हैं तो साथ में मट्ठा भी लेकर आते हैं। गान्व में मट्ठा कभी बेचा नहीं जाता था, जो भी घर पर लेने आ जाए या जिस घर में गाय दूध नहीं देती है, उन घरों के लोग भी मट्ठा लेने दूसरों के घर जाते थे/हैं।

इन्हीं खेतों की मेड़ों पर दोपहर में उनका सपरिवार भोजन होता है, जिसे प्रीतिभोज भी कह सकते है। शहरी लोगों का वनभोज या पिकनिक कहा जाता है।

श्रमिकों को मजदूरी सम्बन्धित रीति रिवाज

श्रमिकों को मजदूरी अनाज होता था। वार्षिक मूल्य अनाज के रूप में मिलता था। वर्तमान में यह प्रथा खत्म होती जा रही है और दैनिक मजदूरी के रूप में काम शुरू हो चुका है। कुछ समय पहले तक एक व्यक्ति किसी घर के साथ निबन्धित हो जाता था और घर के निबन्धन के अनुसार काम करता था और फसल आने पर निबन्धित मूल्य के अनुसार अनाज दिया जाता था। इसी तरह धोबी, दर्जी, नाई, बढ़ई, लोहार और अन्य शिल्पकार भी इसी तरह निबन्धन में पूरे साल बिना पैसे लिए काम करते थे और फसल आने पर, फसल कटने पर ''कठुआ'' से उनको अनाज दिया जाता था।

जब किसी परिवार में लड़की या बहू विदा होकर आती है तो उसके साथ आई डलिया के पकवान बटौना/बदौना/बायना/भाजी के रूप में प्रियजनों के घर बांटने नाई/नाइन जाता है। बटौना/बदौना/बायना/भाजी लेने वाला परिवार नाई/नाइन को उपहार स्वरूप एक मुट्ठी भर के अनाज देते हैं। इस प्रकार ग्रामीण अर्थव्यवस्था में मुद्रा विनिमय में अनाज महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था/है। आज भी प्रत्येक गान्व में यह परिस्थिति है। दुकानदार मुद्रा की जगह अनाज लेते हैं, तौल कर उसका मूल्य लगाते हैं और उस मूल्य के बदले घर में उपयोग किए जाने वाली सामग्री को देते है।

कुलीन स्त्रियों के कार्यों से सम्बन्धित रीति रिवाज

प्रत्येक परिवार में औरतें और पुरुष तीन भागों में विभाजित होते हैं।

बड़ी बूढ़ी सयानी औरतें, बड़े बड़े सयाने पुरुष पुत्र, वधू या रिश्तो में बहुएं

कुंवारी (कुमारी) कन्या तथा मान के रिश्ते की स्त्रियां व लड़कियां या बच्चे लड़के और मान के रिश्ते की लड़के और पुरुष, बहुए और पुत्र वधु और पुरुषों में युवक और रिश्तो के मान सम्बन्धित पुरुष जैसे दामाद भान्जे और अन्य घर की बुजुर्ग/बड़ी बड़ी सयानी औरतों के कार्य, बुजुर्ग स्त्रियों में दादी परदादी नानी और माताएं आती हैं।

सन्युक्त परिवार है तो इसमें पिता और पिता से बड़े भाइयों की स्त्रियां या इसी तरह के रिश्ते, आपसी रिश्ते लगभग पूरे भारत में एक ही तरह के हैं। कोई विशेष नाम परिवर्तन नहीं है। प्रत्येक परिवार में बहुएं हैं तो सास भी होती है और दूसरे परिवार में जहां से शादियां हुई हैं वहां समधी, समधन भी होती है। बुजुर्ग स्त्रियों का कार्य पूरे परिवार पर अपने अनुभव के आधार पर नियन्त्रण करना होता है। सभी प्रकार की प्रथाएं, रीति रिवाज, उनका समय, करने का तरीका इनको कन्ठस्थ रहता है। इन्होंने अपने बुजुर्ग स्त्रियों, जिसमें आसपास की भी स्त्रियां शामिल हैं, से स्मृति के आधार पर सीखा है। यह पारिवारिक रीति रिवाज सुसम्पन्न कराती हैं तथा कुल की मर्यादा बनाए रखती हैं। अगर इनके आदेश या निर्देश ना माने जाएं या पालन ना किया जाए तो इनका नाराज होना स्वाभाविक है और कलह का कारण भी बन जाती है। अत्यधिक कठोर नियमों के पालन कराने के चक्कर में पारिवारिक कलह भी इन्हीं के कारण होता है। इन बुजुर्ग स्त्रियों के बहुत से निर्देश होते है जैसे विवाहित बहुएं घर से बाहर ना निकले, जब भी निकले घून्घट डाल कर निकले। कोई ऐसी हरकत ना करें जिससे परिवार की बेइज्जती हो।

एक सोचने की बात है कि वह लड़कियां जो अपने माता–पिता की, शादी से पहले, प्रिय बेटियां हुआ करती थी और कुछ हद तक उनकी आज्ञा का पालन ना करते हुए आजादी के साथ घूमना फिरना रहता था। जिन पर अनुशासन कम कठोर था। जिन्हें अनुशासन को तोड़ने में कुछ आजादी थी, अचानक शादी के पश्चात ससुराल में इस तरह के कठोर अनुशासन और नियन्त्रण में कार्य करना, ऐसा ही है जैसे एक वयस्क डाली को अचानक मोड़ना। समय के साथ और स्मृति के आधार पर थोड़ा बहुत अनुशासनहीनता को समझने वाली सारी स्त्रियां इसको मान लेती हैं तो उनका परिवार बहुत अच्छा चलता है, अन्यथा अचानक इतने कठोर अनुशासन के कारण, बहुएं अपनी सास, बुजुर्ग स्त्रियों से थोड़ा बहुत नाराज भी हो जाती हैं और कठोर नियन्त्रण वाली बुजुर्ग स्त्रियों से अनबन भी हो जाती है। बुजुर्ग स्त्रियों की इच्छा होती है या कहें आदेश होता है कि पुरुषों से ज्यादा बात ना करें, हंसी ठिठोली ना करें, ऐसे वस्त्र आभूषण ना पहने जो पराए पुरुषों को अपनी और आकर्षित करने वाले हो। इनका निर्देश रहता है कि सयाने पुरुषों के सामने नवविवाहिता है या विवाहिता, घून्घट निकाल कर डाल कर जाएं। सभी बुजुर्ग पुरुष और स्त्रियों के चरण स्पर्श करें। सास की मौजूदगी में ही बातचीत करें या उन्हीं के निर्देश के अनुसार बात करें। कहीं–कहीं तो इतना

कठोर अनुशासन होता है कि बुजुर्ग स्त्रियों के सामने वह अपने पति से भी किसी भी मसले पर बात नहीं कर सकती। परिवार की शान्ति को बनाए रखने के लिए, अपनी भड़ास निकालने के लिए बहुएं अगर उनकी आदेशों का उल्लन्घन करती हैं, तो उनकी शिकायत मोहल्ला, पड़ोस, रिश्तेदारी की स्त्रियों और सहेलियों से की जाती है। कभी–कभी विशेष अवसरों पर गीत के द्वारा भी सार्वजनिक की जाती हैं जैसे

कोउ इते आव री, कोउ उते जाव री।
मोरी नोनी दुलैया खाव, देख जाव री।।
खाबे की बिरिया न लेवे डकार।
काम की बिरिया जड़ आवे बुखार।।
कोउ इते आव री, कोउ उते जाव री।
नोनी दुलैया खाव, देख जाव री।।

अर्थात सयानी स्त्रियां, बहुओं के कथनानुसार खाने–पीने और निर्देश देने में ही आगे रहती हैं और अगर उनसे किसी सहायता या काम करने के लिए कहा जाए तो वह बीमार और बुखार चढ़ जाता है।

विवाहित स्त्री अपने ससुराल से असन्तुष्ट होती है तो वह अपने माता पिता से कुछ इस प्रकार की शिकायत करती है या अपने असन्तोष को जाहिर करती है। यह सब सान्स्कृतिक कार्यक्रमों के द्वारा गाए जाते हैं जो कहीं ना कहीं परिवार में उन पर लगे प्रतिबन्धों को जाहिर करती है जैसे :–

खाके जहर मर जईहो, माई मैं ससुरे ना जइयो।
सास मोरी अन्धी, ससुर मोरा लन्गाड़ा।।
देवर मोरा लल्लू, खसम मोरा पगला।
खाके जहर मर जईहो, माई मैं ससुरे ना जइयो।।

विवाहित स्त्रियों व पुरुषों के कार्य

जब स्त्री विवाहित होकर घर में आती है, अगर विवाहित स्त्री का सम्बन्ध अगर कुलीन वर्ग से है, तो वह घर के अन्दर ही निवास करती हैं। उन्हें बाहर निकलने की अनुमति नहीं थी। अब इसमें कुछ छूट मिल चुकी है। उन्हें यह निर्देश था कि वह जब भी बाहर निकले, घून्घट डाल कर ही निकलें व सहायता के लिए किसी भी पुरुष को, देवर या कोई अन्य को साथ में ले ले। अकेले जाने की कहीं भी आदेश नहीं थे। सभी जाति की विवाहित स्त्रियों का काम घर के अन्दर ही का थे यथा– अनाज, भोजन पानी की व्यवस्था करना, भोजन तैयार करना, सफाई और अन्य काम जो भी सम्भव है, करना था। घर के अन्दर भी अनुशासन काफी व कुछ हद तक कठोर भी थे। कोई भी स्त्री बिना स्नान किए भोजन नहीं बना सकती थी अर्थात स्वच्छता का विशेष ध्यान व प्राथमिकता। चौका वह स्थान है जहां भोजन बनाया जाता है। जिस समय स्त्रियां खाना बनाती हैं, उस समय कोई भी पुरुष चौके में नहीं जा सकता था और भोजन के समय भी सभी लोगों को हाथ पैर धोकर ही चौके में प्रवेश मिलता था। पूरे परिवार के लिए एक ही तरह का भोजन बनता था, बशर्ते कोई वैद्यकीय आदेश ना हो। सभी को चौके में ही चौके का बना हुआ भोजन ही परोसा जाता था। जहां छुआछूत माना जाता है, वहां प्रतिबन्ध भी काफी कठोर थे। स्त्री के रजस्वला और अशुद्धता की स्थिति में खाना पकाना वर्जित था। परिथितियों के अनुसार स्त्रियां बर्तन साफ करने का कार्य भी कर लेती थी। समृद्ध परिवार साफ करने के लिए किसी स्त्री को अनुमति देकर उसे काम पर रखना अनुमत, स्वीकृत व आर्थिक सहायता प्रदान करने जैसा कार्य था। नौकरी व नौकरियों के अभाव में धनोपार्जन हेतु नौकरानी के रूप उन्हें यह कार्य करना पड़ता था। घर में सभी तरह का अनाज अपने उपलब्ध शक्तियों में तैयार करना होता है जैसे धान कूटना, गेहू पीसना, दाल को दरना और अन्य चीजें जो चक्की से हो सकता था। समृद्ध परिवार में यह कार्य नौकरानी /नौकरों के द्वारा भी करा दिया जाता था।

कुलीन परिवारों में पर्दा प्रथा कठोर होता था। अतः किसी भी पुरुष का उस स्थान में, घर के अन्दर आसानी से प्रवेश नहीं मिलता था, खासतौर से वह स्थान जहां स्त्रियां निवास करती थी। बच्चों को छोड़ दिया जाए, तो घर का बुजुर्ग व्यक्ति घर के अन्दर खखार कर ही प्रवेश कर सकता था। प्रवेश के समय खखारने का अर्थ है कि मैं एक पुरुष हूं और सभी स्त्रियां यथा योग्य पर्दा कर ले। धार्मिक कार्यों, त्योहारों और अन्य विशेष कार्यों में स्त्रियों की भागीदारी अधिक रहती है और रहती थी। वह किस तरह से मनाए जाएंगे, यह घर की बुजुर्ग स्त्रियां जो एक से अधिक हो सकती हैं, के द्वारा निर्धारित किया जाता था। अलग–अलग त्योहारों के अनुसार पकवान बनाये जाते थे। यह सब

पकवान मौसम के अनुसार, उपलब्ध सब्जियां, अनाज की उपलब्धता के अनुसार ही बनता था। सभी भोजन सभी परिवार के सदस्यों के द्वारा तन्मयता से तैयार किया जाता था और पूजा होने के पश्चात ही खाने के लिए उपलब्ध हुआ करता था। छोटे बच्चे इतने स्वादिष्ट पकवान को देखकर मचलते थे, जिन्हें उनकी माताएं चुपके से एक दो सामान दे दिया करती थी। जिसे बच्चे दूसरों को दिखा कर खाते थे और मां के द्वारा किए गए कार्य को प्रदर्शित कर देते थे, जिस पर माता को आदेश अवहेनना पर थोड़ी बहुत डान्ट पड़ जाती थी। एकादशी, महालक्ष्मी पूजा, तीजा, कार्तिक स्नान में तरह–तरह के भोजन पकवान बना करते थे। चूंकि ये अलग–अलग त्यौहार है अतः अलग–अलग देवी, देवताओं की पूजा होती है। इसके अलावा गौरइया, सुहागले, आदि भोज केवल और केवल स्त्रियों के थे। कुछ त्यौहार जो केवल स्त्रियों के थे, उसमें पुरुषों का हिस्सा नगण्य या पूरी तरह से मना था। विवाहित स्त्रियां, बुजुर्ग स्त्रियों से कम उम्र की होती है, घर के अन्दर के विशेष अनुशासन में ही रहती है। इसी कारण अनुशासनहीनता होने पर कुछ बातें हो जाया करती है। जिसका निपटान घर की बड़ी स्त्रियों के द्वारा और अगर उन्हीं के साथ कटुता है तो पुरुषों के द्वारा कर दिया जाता था, समझा दिया जाता था। लेकिन कभी–कभी गृह कलह बहुत बढ़ जाती थी तो उस समय बन्टवारा कर दिया जाता था।

स्त्रियां बहुत ज्यादा पढ़ी हुई नहीं थी, खासतौर से दूर–दराज के गान्व जहां शिक्षण एक सपना था और आज भी है। कुछ इलाको में आज भी है क्योंकि बेईमान (अध्यापक, अधिकारी, कर्मचारी–गण), आज के शब्दों में ''आउटसोर्स'' कर देते हैं और शिक्षा फिर भी स्वप्न बना रह जाता है। इस अवस्था में, निश्चित रूप से, ग्रामीणों की विचारधारा बैल या घोड़े के आन्खों के आगे बन्धे हुए, उपकरण की तरह एकल हो जाती है, सन्कीर्ण हो जाती है। ममता और अपनत्व किसी भी स्त्री का एक गहना है। प्राकृतिक नियम है कि वह अपने बच्चे का विशेष ध्यान रखें और साथ ही पति का ख्याल रखे। इस तरह से सम्पूर्ण परिवार की प्राथमिकता कम हो जाती है। गृह कलह बहुत बढ़ जाने पर बन्टवारा हो जाता है। एक लड़का एक कथित सम्मानीय नौकरी अर्थात सरकारी नौकरी करता हो तो उसको किसी भी व्यक्ति के अनुपात में बहुत ज्यादा पैसा मिलता है और वह अपने बच्चों और पति पत्नी की तरफ ज्यादा ध्यान देता है और कुछ अपने परिवार को बहुत पैसा देते हैं। यह आर्थिक असमानता भी गृह क्लेश का कार्य करता है। धन जमीन को लेकर अक्सर झगड़े होते हैं। कहावत है– जर जोरू जमीन या अन्ग्रेजी में – ''वैल्थ वाइन वाइफ'' ही अक्सर क्लेश के कारण होते है। तेजतर्रार स्त्री बन्टवारे के लिए दबाव बनाती है और यह कभी कभी सम्भव हो जाता है। यद्यपि लोकगीत हर जगह नहीं गाया जाता है लेकिन समय मिलने पर जहां लोकगीत गाए जाते हैं, वहां एक तेजतर्रार स्त्री जिसके मन में यह बीज पनप रहा होता है, इस गीत को भी गाती थी, जो यह प्रदर्शित करती है कि मैं यहां सन्तुष्ट नहीं। यह लोकगीत सुनने को मिलता है।:–

दाऊ हमें तुम न्यारो कर दो।
बहुत दिनन भई सहत सहत।।
अब तो बन्टवारों कर दो।
जितनों कमाउत सब तोमइ ले जात।
लड़का हमारे कोरन को ललचात।
अरे अब तो हमारी सुन।
दाऊ हमें तुम न्यारो कर दो।

बच्चों की माताएं सोचती है कि इसका पिता का बहुत पैसा आता है लेकिन उस अनुपात में इसे कुछ भी नहीं मिलता। यह असन्तुष्टि का कारण बन्टवारे की तरफ अग्रसारित होता है और एक नया सन्युक्त परिवार की सृष्टि व सृजन हो जाती है।

कुमारी लड़कियों के रीति रिवाज

कुलीन परिवारों में कुंवारी लड़कियों पर बहुत कड़ी नजर रखी जाती थी। यह ध्यान रखा जाता था कि कुलीन परिवारों की लड़कियां हर तरह से सुरक्षित रहें, उनके सम्मान में कोई धक्का ना लगे। पालन पोषण अच्छा हो व सुन्दर, सुशील और सुशिक्षित बने। इसके लिए परिवार तन मन धन से कोशिश करता था क्योंकि लड़की ही उस परिवार का सम्मान और इज्जत कहलाती है।

पहनावे और आभूषण

लड़कियों के पहनावे और आभूषण अन्य स्त्रियां, विवाहित, विधवा, बुजुर्ग से भिन्न होते हैं।

खेल

छोटी बच्चियां हैं, बच्चे हैं अतः खेलना उनका एक स्वाभाविक प्राकृतिक कार्य है। कुछ क्रीडायें इस प्रकार की होती है।

गुट्टा खेलना

गुट्टा खेलना का रिवाज प्रथा, सावन के महीने से शुरू होता था। इसमें लड़कियां सात गुट्टे के साथ अपनी सहेलियों के साथ बारी–बारी से खेलती थी। ब्रैकेट इस खेल का वर्णन करें

झूला

वर्ष का पान्चवा महीना अर्थात श्रावण महीने की श्रावणी तीज/सावनी/सावन तीज के बाद घर में झूले पड़ने लगते थे। लड़कियां अपनी सहेलियों के साथ झूला झूलती थी। गान्व में पेड़ों पर भी झूला डालकर झूला झूला जाता था। विवाहित स्त्रियां, नवविवाहिताएं भी समय मिलने पर उस झूले पर पहुंच जाती है। इस अवसर पर झूला गीत होते है। श्रावण गीत गाने के प्रथा कुछ स्थानों पर आज भी चल रहा है

अरे रामा झूला घालो कदम की डार।
झूलावें राधा प्यारी रे

बच्चों के क्रियात्मक रीति रिवाज

बच्चों के क्रियात्मक रीति रिवाज दो तरह की है।
1 क्रीड़ा 2 क्रियात्मक।

एक– जो कभी भी सहेलियों के साथ खेले जा सकते हैं।

दो– जो समय अवधि के अनुसार किसी त्योहार के समय किए जाते हैं। इनके बहुत सारे उदाहरण हैं।

जातियों की परिवारों, महिलाओं से जुड़े रीति रिवाज

यह क्षेत्र सामाजिक दृष्टि से उच्च्य कुल और निम्न कुल में विभाजित है। निम्न कुल के परिवार आर्थिक दृष्टि से कमजोर हैं तो निश्चित रूप से महिलाएं जो उनका परिवार सम्भालती हैं और आर्थिक दृष्टि से शोषण का शिकार भी हैं। उनके पतियों की आर्थिक आय कम होने के कारण, घर की स्त्रियों को भी परिवार चलाने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है। किसी के घर में सहायक बनकर या फिर खेत में अकेले या पति के साथ सहायक/नौकर का काम करके, जाति के अनुसार, उनके रीति रिवाज, उनके कर्मानुसार विभाजित हैं।

नाई परिवार से जुड़े हुए रीति रिवाज

इस जाति के महिला पुरुष, कुलीन जाति में होने वाले सभी सन्स्कारों में सहभागिता निभाते हैं। कुलीन जाति का अर्थ– आर्थिक रूप से कुछ हद तक सुदृढ़ मजबूत है। जन्म, मुन्डन, विवाह, मृत्यु अनेकों तीज, त्यौहारों में महत्वपूर्ण भूमिका रहती हैं। इस परिवार के स्त्री–पुरुष किसी ना किसी प्रकार से कुछ परिवारों के साथ जुड़े रहते हैं, निबन्धित रहते हैं। नाई की पत्नी को नाईन कहते हैं। जन्म सन्स्कार में वह प्रसूता स्त्री के स्नान के समय एकल भूमिका निभाती है, वस्त्र इत्यादि पहनाती व उतारती है, तेल लगाती है, मालिश करती है। मोहल्ले पड़ोस और उस परिवार से सम्बन्धित अन्य परिवारों को बुलौआ/निमन्त्रण देने जाती है, उपहार में प्राप्त भोजन सामग्री को अर्थात बायना देने भी जाती है। यह बायना उसी परिवार में जाता है, जिस परिवार को निमन्त्रण दिया जाता है। बायना देते वक्त, बायना प्राप्त करने वाला परिवार इन्हें अनाज या धन के रूप में उपहार देता है। इसी तरह से कन्या विवाह के अवसर पर सम्पूर्ण विवाह के दौरान वह कन्या के साथ बनी रहती है, यहां तक कि मन्डप के नीचे और विदा होने तक नेक दस्तूर और निछावर न्योछावर का धन वस्त्र आर्थिक रूप से सुदृढ़ वर पक्ष उसे कपड़े आभूषण भी देते हैं। वैसे वर पक्ष निम्न कहे जाने वाले समस्त जातियों के लिए, जो विवाह में सहायता करते हैं या विवाह सम्पन्न करने में सहायता करते हैं, के लिए लिन्ग के अनुसार वस्त्र आभूषण लाते हैं। उनके लोकगीतों में नाई परिवार की भूमिका अत्यन्त

सराहनीय व महत्वपूर्ण मानी जाती है। किसी किसी परिवार में वर वधु या बच्चों की नजर उतारने का काम भी करती है। उस वक्त गान्व समाज की उपस्थिति स्त्रियां लोक गीत गाती है उदाहरण के तौर परः–

निछावर मान्ग रई नाईन,
मैं का उखो दे दव।
पावन का लच्छा, हाथन को कन्गना मान्ग रई नाईन,
मैं का उखो दे दव।
बड़े घरन की बहू स्यानी, बेटा भयो अन्गना में,
नईं मान रही नाईन लेवे खो।
मैं का उखो दे दव।
सास से मान्गत, ससुर से मान्गत, जेठा जेठानी से मान्गत,
मैं का उखो दे दव।

कहार परिवार से जुड़े हुए रीति रिवाज व त्यौहार

इस क्षेत्र में पानी की समस्या हमेशा ही रही है। पानी के साधनों में नदी, नाले, गान्व के बाहर, मुख्य रास्तों पर बने हुए कुएं, तालाब या तालाबों के पास बने हुए पेयजल के कुएं है। अगर काफी समृद्धशाली परिवार है तो उनके आन्गन में कुआं भी मिलता था। किसी भी जलस्रोत से पानी लेने का लाने का कार्यक्रम श्रमसाध्य कार्य है। जब कोई उत्सव होता है तो घर में पानी की काफी मात्रा में आवश्यकता होती है और उस दौरान घर में पानी भरने का कार्य कहार जाति के लोग करते हैं। घर के अन्दर किसी भी पुरुष का जाना मना है तो कहार जाति की स्त्री, जिसे कहारिन भी बोलते हैं, का कार्य घर के अन्दर पानी भरने का होता है और पुरुषों के नहाने, धोने और अन्य कार्य में पानी के उपयोग हेतु घर के बाहर रखे हुए बर्तनों में कहार पानी भरता था। कहारिन घर की साफ सफाई भी करती थी। साथ ही उपयोग किए गए बर्तनों को मान्झना/साफ करती थी/बर्तनों को साफ करती थी। विवाह आदि उत्सव पर अपनी भूमिका बखूबी निभाते थी। वार्षिक धनराशि यदि अनाज है, के अलावा इन उत्सवों पर नगद धनराशि, कपड़े, अनाज व अन्य सामग्री उपहार में मिलते थे। काम की सुगमता हेतु स्त्री पुरुष कांच/कान्छ लगाकर धोती पहनतें है। इनके पहनावे में किसी भी परिवार से कम स्तर नहीं था। गले में सुतिया, पैर में कड़े लच्छे झांझें, हाथ में बहुटा, कड़े, कन्गन आदि पहनती थी। इन कहार परिवारों के यहां जब कोई सामाजिक उत्सव होते हैं, उस समय अपने से सम्बन्धित विशेष वाद्य हुड़क के साथ नृत्य करती हैं। पुरुष हुड़क बजाता है। यह हुड़क वाद्य डमरु के आकार का होता है तथा इसे हाथ से ही पतली डंडी से बजाया जाता है। हुड़क के साथ झांझ भी बजाई जाती है। वाद्य नृत्य के साथ गीत ना हो तो कैसा सन्गीत कार्यक्रम। इस समय गाए जाने वाले लोकगीत कुछ इस प्रकार के हैं, जिसमें उस वक्त की पारिवारिक अवस्थाएं, रीति रिवाज, बाल्य विवाह, बेमेल विवाह सामाजिक समस्याएं पारिवारिक समस्याएं की स्पष्ट झलक अवश्य मिलती है। यथाः–

छोटे बलम बड़ी नार ना,
जर जैयो हमारे जोबना।

पानी खौ गए, पिया सन्ग लग जावे।
हाथ में लै जयें डोरना।
जर जैयो हमारे जोबना।

गोबर खौं गए, पिया सन्गे जे लग जावें।
सार में मचल गए बालमा।
जर जैयो हमारे जोबना।

हमाये खेत में बरिया कौ पेड़ौ।
ओई सें डार दये पालना।।
जर जैयो हमारे जोबना।

कै मौरी जै भाई भतीजे।
कै जे तुमरे लालना
जर जैयो हमारे जोबना।

नै आयं भैया मोरे ललनवां।
जै तो हमाये बालमा।
जर जैयो हमारे जोबना।

हन्डी ऊपर हन्डा, हम घरे चले।
लुटिया सन्ग उठाए चलें।
जर जैयो हमारे जोबना।

<u>बारी परिवार से जुड़े हुए रीति रिवाज व त्यौहार</u>

बारी जाति के परिवार एक प्रकार से नाउ जाति ही है। बारी जाति के परिवार दोना, पत्तल बनाने का कार्य करते हैं। दोनों और पत्तलों की जरुरत, भोजन, दावत के समय आवश्यकता पड़ती है। यह विभिन्न प्रकार के पत्तों को आपस में जोड़कर बनाया जाता है जैसे छियूल/पलाश/ढाक, कमल के पत्ते, केले के पत्ते आदि। क्षेत्र में छियूल/पलाश/ढाक के ही पत्तों का ज्यादा उपयोग होता है। पुरुषों का काम पत्तों को तोड़कर लाना है और घर में स्त्रियों का काम बांस या अन्य पेड़ों की सीकों से पत्तों को जोड़कर बनाना होता है। दोना और पत्तल बनाने के पश्चात उन्हें सुखाकर बेचने का काम होता है। कुछ परिवार पन्खे, झाड़ू, मौर आदि भी बनाते है। जिस समय, घर की स्त्रियां इन पत्तों से दोना आदि बनाती हैं तो लोक गीत गाती है।:—

बब्बा बब्बा कां गये ते।
पतरी छोंड़ हगन गए थे।।
पतरी लै गऔ नउवा।
बब्बा हौ गओ नउवा।।
नउवा नै मूड़ौं मूड़।
बब्बा हो गये, रैगये डूंड।।

यह किसी भी स्त्री के द्वारा अपने पति के प्रति प्यार को दर्शाती है।

<u>धोबी परिवार से जुड़े हुए रीति रिवाज व त्यौहार</u>

जैसा कि जगजाहिर है— परिवार के कपड़ों को इकट्ठा करना, तालाब या सार्वजनिक जल स्रोतों पर जाकर धोकर लाना, अगर तालाब नहीं है तो नदी, नाले, जन्गल के कुएं, जन्गल और मुख्य सड़कों पर बने हुए कुएं के पास बने हुए एक गड्ढानुमा सन्रचना जिसमें पानी भर दिया जाता है, में धोना, उनका कार्य होता है। गन्दगी हटाने के लिए उसर खेतों में उगी, उठी हुई सफेद प्रकार का सफेद रन्ग का एक प्रकार की मिट्टी/नोना में कपड़ों को डाल दिया जाता है। फिर हाथ से या मुगरी/थपकी/कुतका (कहावत धोबी का कुत्ता/कुतका, घर का, न घाट का कुतका को छिपाने के लिए उसे झाडियों में डाल दिया जाता था), लकड़ी से बने हुए एक डंडे से पीट कर धोया जाता है। यह सफेद रन्ग का पदार्थ को वर्तमान में नोना भी कहा जाता है और साबुन की तरह कार्य करता है। कपड़ों को धूप में सुखाकर घर में वापस कर देते हैं। कुछ कपड़े जिनको घर के बाहर नहीं ले जाया जा सकता है या स्त्रियोचित कपड़ो को घर के अन्दर ही धोया जाता था/है। इस कार्य को धोबी परिवार की स्त्रियां जिन्हें धोबिन भी बोलते हैं, घर के अन्दर ही करती हैं। जहां स्वयम् का स्वार्थ हो, वहां छुआछूत नहीं माना जाता— जैसे कहार का पानी भरना, धोबियों के द्वारा कपड़े को धोना और इसी तरह अन्य जातियों के द्वारा किए गए कार्य। लेकिन जब यही जातियां बाहर पानी या कपड़े छू ले तो छुआछूत उभर कर आ जाता है। क्या सोच है? क्या कल्पना है? इस परिवार की स्त्रियां विवाह के अवसर पर ''सिन्दूर देने'' का कार्य करती थी। सिन्दूर देने के कार्य में धोबिन का एकाधिकार है।

इन जातियों के स्वयम् के कुछ पारम्परिक तीज त्यौहार हैं और स्वयम् के उत्सव पर, विवाह सन्स्कारों पर, स्वयम् का गीत नृत्य वाद्य होते हैं। धोबी जाति के नृत्य को कांनड़ा या कन्डाला कहते हैं। कहीं—कहीं ये लोग रावला नृत्य भी करते हैं। इसमें मुख्य नर्तक, केन्द्र में मथानी की तरह नाचता है, कभी बाएं तरफ कभी दाए तरफ घूमता है। शेष सहयोगी वृत्ताकार खड़े हो जाते हैं। यह धोबी जाति में विवाह के समय पर गाया बजाया जाता है। नर्तकों की पोशाक बागो कहलाती है। सिर पर पगड़ी/पाग बांधता है, पैरों में घुन्घरू बांधता है। गीत में बिरहा/विरह गीत गाया जाता है। इनके स्वयम् का कोई विशेष वाद्य नहीं है, फिर भी नृत्य के समय थाली, ढोलक, मजीरा आदि बजाते हैं। नृत्य करते समय इनकी कमर झुकी रहती है। इसमें महिलाओं का सहभागिता अधिक है। क्षेत्र अनुसार उनके रीति रिवाज भिन्न होते हैं। नृत्य के समय गाए जाने वाला एक लोकगीत उदाहरण के तौर पर निम्न है।

लकरी जर केवला भई, केवला जर भऔ राख।
मैं पापन ऐसी जरी, केवला भई ना राख।।
हमने कहा बिगारो बलमा कौ।

शायद इस तरह के लोकगीतों को लेकर साधू सन्यासियों के द्वारा अपने दोहे रचे गए या दोनों से आकर्षित होकर, इस तरह के गीत लिखे गए। यह एक शोध का विषय है।

<u>बसोर परिवार से जुड़े हुए रीति रिवाज व त्यौहार</u>

बसोर जाति का जन्म व मृत्यु पर महत्वपूर्ण भूमिका होती है। काफी पुराने समय से इस क्षेत्र में, इस जाति के लोग साफ सफाई करने, सड़क साफ करने वाले, कूड़ा उठाने का कार्य करते थे। कुछ क्षेत्र में अभी भी इसका कुछ हिस्सा करते हैं। मैला उठाने का कार्य बन्द हो चुका है लेकिन बाकी कार्य जैसे सड़क साफ करना, घर की साफ–सफाई, आसपास का इलाका, नाली वगैरह साफ करना अभी भी जारी है।

पुरातन समय में इनकी महिलाएं घरों में जाकर शौचालय साफ किया करती थी। सबसे महत्वपूर्ण बात जो सम्मानीय कार्य है वह बच्चा होने की स्थिति में है। नरा छीलना/काटने का कार्य करते थे।

बाहरी कार्य को करने के पश्चात, जो समय बसता था या परिवार के वे लोग जो बाहर नहीं जाते और घर पर ही रहते हैं, उनका काम था बान्स और बान्स की सीन्को से डलिया, टुकनिया, सूता आदि बनाया करते थे। इन सामग्री का उपयोग घर परिवार में हमेशा ही होता रहता है। समाज में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका हुआ करती है। विवाह आदि पर यह अपने कार्य को मनोयोग से काम करते हैं। उस परिवार में, जहां ब्याह शादी होती हैं, से उपहार आदि प्राप्त करते हैं। बच्चे के जन्म होने पर और उसके अन्य सन्स्कारों पर इन्हें निछावर/न्योछावर देने का रिवाज था। जब किसी व्यक्ति के मृत्यु पश्चात सन्स्कार होता था, उस समय दिन तेरही/त्रयोदशी में भोजन की पत्तल सबसे पहले इन्हें ही दी जाती थी। बच्चे के जन्म के समय जब नाल/नारा/नरा छीला/काटा जाता था, उस समय सोहर के बाहर अर्थात प्रसूता स्त्री कक्ष के बाहर बैठी गान्व समाज की स्त्रियां कुछ इस तरह के लोकगीत गाया करते थे।

कैसी मचल रई दाई।
ऐसी मिजाजिन दाई,
लाल कौ नरा न छीनै।
नरा न छीनै, मौउं न बोले।
कनैया को नरा ना छीनै।
बड़ी मुश्किल मां मानी दाई।
जब मनभावन उपहार पायो।
कनैया को नरा छीलो।

यहां पर परिवार या महिलाएं और पुरुष, दोनों मिलकर सड़क झाड़ते हैं, उस समय कुछ इस तरह का युगल गीत गाते रहते हैं।यह गीत स्त्री और पुरुष अलग अलग ही गाते है।

पुरुष	मैं तोर मढ़ई/मड़ई,	तै मोर महरिया।
स्त्री	तै मौर मढ़ई/मड़ई,	मैं तोर महरिया ।।
युगल	चला, दोनों मिल के	झारिया डगरिया ।..........

लोकगीत गाने का प्रचलन सभी जातियों में कम होता जा रहा है और उनके रीति–रिवाजों में भी कमी आ रही है।

वैसे इस कार्य को वर्तमान(2020ई0) में सवर्णों के आर्थिक रुप कमजोर बच्चे, भरण पोषण हेतु जीने के लिए करने लगे है।

<u>दर्जी परिवार से जुड़े हुए रीति रिवाज व त्यौहार</u>

दर्जी जाति की प्रथाएं रीति रिवाज निश्चित रूप से अन्य जातियों से भिन्न है। दर्जियों का काम कपड़े सिलना और वस्त्रों को तन के हिसाब से तैयार करना है। कहा जाता है,

अगर दर्जी ना होते, हे तुम मानव जाति, नग्न अवस्था में ही रहते।

विवाह के अवसर पर कपड़ा ब्योंतेंना "दिना क बताना" एक नेक होता है। जिसमें दर्जी वर/लड़के का नाप लेता है। दर्जी के परिवार की स्त्रियां, दुल्हन के कपड़ों के नाप लेती है। दर्जियों के काम आज भी इसी प्रकार चल रहा है। एक अजीब सी प्रथा है कि

दर्जी, मेहतर का छुआ नहीं खाते और
मेहतर, दर्जी का छुआ नहीं खाते।

दर्जियों की स्त्रियां जिस समय दुल्हन की नाप ले रही होती है, उस समय एकत्रित स्त्रियों लोकगीत गाती है। जैसेः—

उन्ना की नाप सम्भल कर लइयो,
ओ मोरे दर्जी भैया।
लहंगा, चुनरी, सबै कुछ सियो, और तुम सिओ अन्गिया।
सींवे के पैसे हम दीबे, निछावर में देवी पौच रुपैया।
ओ मोरे दर्जी भैया।

सुनार परिवार से जुड़े हुए रीति रिवाज व त्यौहार

सुनार जाति का मुख्य काम आभूषण बनाना है। इस कार्य में विशेषज्ञ सुनार के साथ पूरा घर आभूषण बनाने में पूरी मदद देता है। स्त्री हो या पुरुष— आभूषण दोनों को ही चाहिए क्योंकि आभूषण पहनने से स्त्री और पुरुषों में आकर्षण पैदा होता है, और कहते हैं कि वे अधिक सुन्दर लगने लगते हैं। सोनार जाति के लोग, सोना चांदी और गिलट के आभूषण बनाते हैं। इन आभूषणों में तरह—तरह के रत्न जड़े जाते हैं और यह सभी आभूषण खरीदने वालों की आर्थिक सम्पन्नता के अनुसार ही बनाए बनते हैं। गरीबों के आभूषण गिलट, चांदी और पीतल के हो सकते हैं, जबकि धनी व्यक्तियों के आभूषण ही स्वर्ण आभूषण कहलाते हैं यह आभूषण विभिन्न तरह के होते हैं। आभूषण अध्याय में विवरण देखे।

ताम्रकार परिवार से जुड़े हुए रीति रिवाज व त्यौहार

इस जाति के स्त्री और पुरुष धातुओं विशेषकर ताम्बे से बर्तन बनाने का कार्य करते हैं। इनके बनाए हुए बर्तन सभी जाति के लोग विभिन्न कार्यों में उपयोग लाते हैं। विवाह आदि अवसरों पर इनके द्वारा बनाए गए बर्तनों को दहेज में दिया जाता था। अधिकान्श धातु वाले बर्तन जिनको घरों में उपयोग किया जाता है, इन्हीं के द्वारा बनाए होते हैं। कुछ बर्तन सान्चा बना कर ढ़ाला जाता है और कुछ बर्तनों को धातु की प्लेटें काटकर उचित शक्ल दी जाती है। प्राचीन बर्तनों में हन्डा, कोपर, कसेड़ी/कसान्ड़ी, जन्गाल, कलशा, गढ़ुवा आदि प्रमुख हैं। कुछ बर्तन ताम्बा, पीतल, कान्सा व अन्य धातु से बनाई जाती हैं इसमें ताम्बा धातु मुख्य है और बाकी मिश्रित धातु हैं। यद्यपि लोकगीतों में उस समय की सच्चाई के साथ साथ समृद्धशाली लोगों के द्वारा किए गए कार्यों को गरीबों के ऊपर डाल कर गीत गाए जाते हैं जैसेः—

कैसे के दर्शन पाउ हो,
मैया तोरी सकरी दो दुहरिया/देहरी
सोने के गढ़ुवा में गन्गाजल पानी,
कैसे कि मैया को न नभवाउ रे।
मैया तोरी सकरी दो दुहरिया
फूलन की माला औ पान सुपाड़ी,
कैसे कि मैया को नभवाउ रे
मैया तोरी सकरी दो दुहरिया
कैसे के दर्शन पाऊं हो मैया

मैया तोरी सकरी दो दुहरिया

स्त्रियां जिन लोकगीतों को गाती हैं, उन में उपयोग किए जाने वाले बहुत से ताम्र बर्तनों के नाम आते हैं।

कुम्हार परिवार से जुड़े हुए रीति रिवाज व त्यौहार

अन्य सभी जातियों की तरह कुम्हार जाति के परिवार के लोग मिट्टी के बर्तन बनाकर अपने परिवार का लालन पोषण करते हैं। कुछ विशिष्ट कुम्हार, जो अपने कार्य में काफी अनुभव रखते हैं, विविध प्रकार की मूर्तियां भी बनाते हैं। कुछ बहुत कम उपयोग में आने वाले बर्तनों को, आदेश के अनुसार या अवसरों को देखते हुए, पहले से ही तैयार कर लिए जाते हैं। महिलाएं और पुरुष, परिवार के अन्य सदस्यों के साथ मिलकर सामान्य उपयोग के मिट्टी के बर्तन बनाते है। विवाह के लिए डबला, मटका, कुड़ी, गमले, गुल्लक, गुलदस्ते आदि बनाया करते हैं, वही त्योहारों के लिए जैसे दीपावली के लिए दिया, हरछठ के लिए डबुलिया आदि बनाते हैं। पूरा परिवार किसी विशिष्ट स्थान से बर्तनों के उपयोग मिट्टी को लाते हैं, पीसते हैं, छानते हैं और कन्कड़ रहित मिट्टी को भिगो कर दो या तीन दिन के लिए छोड़ देते है। उसके बाद चाक पर, जिन बर्तनों को बनाया जा सकता है, उन्हें चाक पर, अन्यथा मिट्टी को बेल कर या रोटी की तरह बना कर फिर उन्हें हाथ या सान्चे से विभिन्न शक्ल दी जाती हैं।

इन परिवारों के स्वयम् के रीति रिवाज है और अनेक प्रकार के लोकगीत गाने की प्रथा इनके आज भी है। किसी भी सन्स्कार में पन्डितों के आने का कोई रिवाज नहीं है। जातिगत पन्चायत के लोग ही पूरे रस्मों को पूरा करते हैं। विधवा हो जाने पर पुनर्विवाह का प्रावधान इस जाति में देखा गया है। रोज एक ही कार्य को करते रहना एक नीरसता पूर्ण कार्य है, अतः मिट्टी खोदते वक्त, लाते वक्त और अन्य कार्य सम्पन्न करते हुए जिसमें बहुत सारी स्त्रियां शामिल होती हैं या पुरुष भी शामिल होते हैं मिलकर कुछ गीत गाते रहते हैं जैसे

मोरी चकिया(आटे हेतु गेहू पीसने की चक्की) के गैरउं गेर(मतलब चारों तरफ) चुख्खा।
कायरे रै फिरत अन्धियारे में।
अरे हां चुख्खा
मोरे जेठा घरे नइआ ,
जेठानी को उठाए लयें जाय, चुख्खा
अरे हां चुख्खा
चुख्खा कायरे रै फिरत अन्धियारे में।
अरे हां चुख्खा

गडरिया परिवार से जुड़े हुए रीति रिवाज व त्यौहार

वैसे तो गडरिया जाति के लोग पूरे सन्सार में मिलते हैं, लेकिन इस क्षेत्र में गडरिया जाति के रीति रिवाज क्षेत्र के हिसाब से कुछ अलग है। गडरिया जाति के लोग भेड़ पालने का कार्य करते हैं कुछ सम्पन्न गडरिया बकरी और उसके साथ साथ भैंस या गाय भी रख लेते हैं। सर्दी खत्म होने के पश्चात भेड़ों से ऊन निकाल ली जाती है। ऊन भेड़ों के बाल ही होते हैं। शरीर के अलग–अलग हिस्सों से निकाले गए बालों को अलग–अलग रखा जाता है। अलग–अलग हिस्सों के बालों की कोमलता अलग–अलग होती है। जान्घों के पास से निकाली गई बाल बहुत ज्यादा कोमल और मुलायम होती है जिसे पश्मीना कहते है। पश्मीना से बनाए गए शाल बहुत ज्यादा गर्मी देते हैं। भेड़ों के साथ घूमते घूमते यह भेड़ व घोड़ों के बाल से ऊन के धागे भी बनाते रहते है। इनके हाथ में एक चकरी जिसे धरी भी बोला जाता है, बालों को धागे के रूप में बुनते रहते हैं और उनकी पोनी बनाते हैं। इस पोनी से कम्बल, स्वेटर और अन्य तरह के कपड़े बनाते है और बुनते रहते हैं। कुछ सलाई के ऊपर कुछ करघे के ऊपर। यह गुण किसी भी कपड़े के लिए आधार है। महिलाएं भी भेडों के साथ जल स्त्रोत पर जाती हैं और पानी पिलाने के लिए रहटा चलाने का कार्य करती है।

गडरिया के रीति रिवाज यादव जाति से काफी मिलते–जुलते हैं। गीत गाने के साथ ढोलक, ढोल, मन्जीरा और नगड़ियों का इस्तेमाल होता है। यह घुमक्कड़ जाति से सम्बन्धित हैं और समय के साथ–साथ स्थिरीकरण होता जा रहा है। किसी भी समस्या का समाधान पन्चायतें और उनके स्वयम् के स्थानीय नियमों के अनुसार ही होते हैं। लम्बे समय से घुमक्कड़ रहने के कारण शिक्षा की तरफ बहुत कम ध्यान है। महिलाएं हर काम में सहभागी रहती हैं।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

प्रत्येक जाति के लोकगीत उनके द्वारा किए गए कार्यों के अनुसार ही गीत पनपते हैं और फिर सुधारते हुए एक सुख सम्पन्न ज्ञान के साथ खत्म होते हैं जैसे

आड़रदीनी, गाड़र दीन
डला भर ऊन दीनी
रूपे की धरी सोने की माल
रहंट चले पानी ढ़रै
निम ये औलाद बढ़े
कऔ पन्च भांमरे परी कि नई।

गीत स्वतः ही बताता है कि पन्चों की उपस्थिति में विवाह शादी होती है।

<u>कहार व ढीमर परिवार से जुड़े हुए रीति रिवाज व त्यौहार</u>

ढीमर जाति सपरिवार मछली पकड़ने, पानी में उगने वाले उत्पादनों को तैयार करना जैसे सिन्घाड़ा, कमल गटा, कमल का पत्ता, आदि की खेती करने के कार्य करते हैं। यह पूरे समय तालाबों के पास ही रहते हैं और सम्पूर्ण कार्य तालाबों में ही होता है। रोज मछली पकड़ना, मछली पालन एक प्रमुख व्यवसाय है। सिन्घाड़े के समय में सिन्घाड़ा बेचना, और कमल के फूलों व बीज अर्थात कमल गटा से मखाने बनाने का कार्य भी यह लोग करते हैं।

कहार भी पानी से सम्बन्धित कार्य करते हैं। पानी भरते हैं अतः इनके रीति रिवाज कहारों जैसे या उनसे मिलते–जुलते हैं, व होते हैं। इनके सन्स्कारों में पन्डितों का कोई भूमिका नहीं है और सम्पूर्ण कार्य सन्स्कार प्रथाएं पन्चायत समाज का बुजुर्ग बड़े व्यक्ति के द्वारा ही सम्पन्न करा दिए जाते हैं। इनके पहनावे ग्रामीण अन्चलों के अनुसार ही हैं और इनके द्वारा किए गए कार्यों के अनुसार ढाल दिए जाते हैं। अन्धविश्वास, हर अन्य जाति की तरह, इनमें भी बहुत ज्यादा है, कारण अशिक्षा। देवी देवताओं की पूजा की जाती है जिन्हें स्त्रियों सम्पन्न करती है। घर के सभी लोग मद्यदान करते हैं। मद्यपान का कार्य शाम के वक्त सारे कार्यक्रमों से फुरसत पाकर एक साथ बैठकर किया जाता है। विशिष्ट अवसरों पर जैसे विवाह पर शराब बेइन्तेहा पी जाती है। शराब के कारण लड़ाई झगड़े होते हैं, वे लड़ाई झगड़े उन अवसरों पर भी पूर्णतया दिखाई देते हैं। लोकगीत गाने में उपयुक्त वाद्यों का नाम इकतारा और घीचा है। कहा जाता है कि अधिकतर गाने नाक से गाते हैं। प्रेम प्रलाप में उपयोग किए जाने वाले लोकगीत कुछ इस तरह के हैं।:–

काहे दिल डारें, ए गोरी ठाड़ी अन्गाना,
जपरई अन्गाना।।
काहे के तोरे बाजूबन्दा, काहे के कन्कना
काहे की तोरी मोहनमाला, जपरई अन्गाना।।
सोने के तोरे बाजूबन्दा, चांदी के कन्गाना
रुपे की तोरी मोहनमाला, जपरई अन्गाना
रूपा मतलब चांदी
कौना ने लै दये बाजूबन्दा, कौना ने कन्कना,
कौना ने लै दयी मोहन माला, जपरई अन्गाना।
देवरा ने लै दये बाजूबन्दा, ननदी ने कन्कना,
ससुरा ने लै दयी मोहनमाला, जपरई अन्गाना,
कैसे टूटे बाजूबन्दा, कैसे जे कन्गाना,
कैसे टूटी मोहन माला, जपरई अन्गाना।
खेलत टूटे बाजूबन्दा, निहुरत में कन्गाना।
लिपटत टूटी मोहनमाला, जपरई अन्गाना।

विभिन्न सभी जातियां, 4 वर्गों में विभाजित है–

अति पिछड़ी
पिछड़ी,
सामान्य और
समृद्धिशाली।

रीति, जातीय रस्म व लोकाचार Social Etiquette Customs &Traditions

सभी जातियों में विभिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले अपने–अपने लोकगीत और उनकी लोकधुने हैं। लोकगीत मधुर और धुने कर्णप्रिय हैं क्योंकि इनमें सदियों का अनुभव का सम्मिश्रण है और कर्ण प्रिय सन्गीत को ही आगे बढ़ाया है। इन्हें उनके जातिगत गीत, गारी आदि के नाम से जानते हैं जैसे ढिमरियाऊ गारी, कछियाई गारी, धुबियाऊ गारी, गडरियाऊ गारी, कहरवा (कहार गीत) आदि। पारम्परिक रीति–रिवाजों के अनुसार यह अपने लोकगीतों को लिपिबद्ध होने से मना करते हैं। उनका विश्वास है ऐसा करने से उनके लोक देवता नाराज हो जाएंगे। फिर भी स्मृति के द्वारा या कोई ऐसा व्यक्ति उसी समाज में से निकल ही आता है जो इनको लिपिबद्ध करने में सहायता कर देता है।

<u>बेड़नी परिवार से जुड़े हुए रीति रिवाज व त्यौहार</u>

बेड़नी जाति में पितृसत्ता का काम नहीं है। यह मात्र <u>मातृसत्ता प्रधान</u> जाति है। इनका कोई धर्म नहीं होता। यह हिन्दू और मुसलमान, समय के साथ, दोनों धर्मों को मानती हैं। यह लोग नाचने गाने एवम् वेश्यावृत्ति कर ग्राहकों को खुश करने का कार्य करती हैं। मुख्य रूप से इनका कार्य ग्राहकों को खुश कर अपना अर्जन करती हैं।

<u>राई नृत्य परिवार से जुड़े हुए रीति रिवाज व त्यौहार</u>

एक बहुत ही प्रसिद्ध नृत्य है। इस वक्त 2000ईस्वी में एक अपना अलग नाम से प्रसिद्धि पाई हुए हैं। यह मुख्यतः फाल्गुन मास में किया जाता है और यह माना जाता है कि यह फाल्गुन महीने का ही नृत्य है। इसमें मुख्यतया फागे (फाल्गुन मास के गीत) गाए जाते हैं। इनके शब्दों का चयन कुछ रसिक स्वाद का है और यह सम्पन्न रसिक वर्ग को रिझाने के लिए होता है। आवश्यकतानुसार पूरे साल चलता रहता है।

यह नृत्य बेड़नी जाति की महिलाएं करती हैं। नर्तकी के वस्त्रों में घाघरा व चोली है। घाघरे में 16 कलियां होती हैं, जो विभिन्न रन्गों में बनी हुई होती हैं, रन्गी होती हैं। लम्बी चुनरी ओढ़ती है। आवश्यकता पड़ने पर, जहां महिलाएं नहीं मिल पाती, वहां पुरुष महिलाओं का रूप धारण कर इस नृत्य को करते हैं। यद्यपि पुरुष चाहे स्त्रियों का कितना ही नकल करें, पहचान में आ ही जाते हैं। जैसा कि बताया गया है कि यार/आशिक/सम्पन्न वर्ग को रिझाने के लिए होता है तो इसमें रतिक्रीड़ा और उनकी मुद्राओं का बाहुल्य है। सन्गीत की उपासना के चरणों में वासना भी साधना बन जाती है। नर्तकी के साथ मृदन्ग वादक भी नाचता है। दर्शकों को नृत्य करने वाली स्त्रियों के मुख्य अन्ग का भाव भन्गिमा दर्शकों को नजर आती रहे, इसके लिए दो मशालची " राई"/छोटी सरसों की मशाल लिए, नर्तकी के दोनों तरफ बने/खड़े रहते हैं, ताकि उचित प्रकाश की व्यवस्था बनी रहे। सम्भवत या इसी से इसका नाम राई नृत्य पड़ा। इसका प्रमुख वाद्य मृदन्ग है लेकिन साथ में ताल देने के लिए ढोलक, टिमकी नगड़िया, खन्जड़ी मजीरा, झीका तुरही आदि सहायक वाद्य है। कार्यक्रम शुरू होने से पहले "सुमिरनी" गाकर, जो एक भजन है, शुरू किया जाता है। उसके पश्चात फागे, ख्याल, गाये और स्वान्ग किए जाते हैं।

इनके द्वारा गाए जाने वाले लोकगीत कुछ इस प्रकार के हैं यथाः–

ईक दिन होत सबई कौ गौनो होंना उर अनहौंनो
जाने परत सासरें सबकौं, बुरौ लगै चान्च नौनो।
आये लिबौआ, वो ना माने, चाय बता दो सोनो।
ईसुर विदा हुयें जा जिदना, पिय के सन्ग चलौनो।

इस जाति में विवाह प्रथा नहीं है। आर्थिक, सामाजिक और इनके क्रियाकलाप आदि के कारण शायद यह सम्भव नहीं। समय के साथ साथ उपलब्ध पुरुष के साथ रहती हैं या पुरुष उपलब्ध स्त्रियों को साथ रखता है और इस तरह से इन्हें अपने जीवन काल में कई कई स्त्री, कई कई पुरुष जैसा लागू हो, करते हैं। क्योंकि यह मातृ कुल प्रधान जाति है, अतः सन्तानों का नाम माता के साथ चलता है, पिता का नहीं।

यद्यपि प्रत्येक जाति के अपने अलग–अलग कार्य हैं जैसे अगर घर को बनाना है तो कुम्हार की आवश्यकता पड़ती है व अन्य इसी तरह के औद्योगिक क्रान्ति के लिए श्रमिकों की आवश्यकता पड़ती है। जिनके लिए पुराने समय में कोई विशेष जाति नहीं थी। इसके अलावा एक ही तरह का कार्य करके जीवन यापन किसी किसी परिवार के लिए मुश्किल हो जाता है। कारण श्रमिक परिवार की आबादी का गान्व की आबादी के अनुपात में ज्यादा बड़ा होना। अतः परिवार की उदर पूर्ति के लिए अपनी जाति के अलावा अन्य कार्य भी करने होते हैं जैसे– घरों में नौकर या नौकरानी बनकर कार्य करना, बाजारों में जाकर सब्जी खरीद कर सब्जी बेचना, भवन निर्माण के लिए रेजागिरी करना, खेतों में

फसल काटना, बोने का कार्य आदि। यह सभी श्रमिक परिवार(सवर्ण जाति समेत) होते हैं यद्यपि यह सब किसी ना किसी जाति से सम्बन्धित हैं लेकिन इस कार्य के लिए कोई विशेष जाति नहीं चाहिए बल्कि अर्थव्यवस्था को ठीक रखने के लिए जो कार्य मिल जाए वह कार्य करके, अपने परिवार को आगे बढ़ाते हैं। इसमें पूरा परिवार एक साथ घूमता है, जाता है और कार्य करता है। जहां पहले खपरैल बनाने का कार्य कुम्हार करते थे, अब उसकी जगह ईट बनाने के लिए भट्टों ने काम ले जगह ले ली है और उस जगह काम करने के लिए अपना गान्व घर छोड़ना पड़ता है। वही जाकर कार्य करते हैं। इस तरह से सभी जातियों के लोग एक जगह रह कर अपनी जाति भूल जाते हैं, इस तरह एक नई जाति का अभ्युदय होता है जिसे श्रमिक जाति कहते है। फसल के समय खेत पर कार्य कर रहे दम्पति, कलेवा के समय कुछ इस तरह के गीत गाती हैं यथाः–

लै लो कलेवा, मैं ठाड़ी पिया
लै लो कलेवा
बेलन खों रोक पिया, अपनौ तो देख जिया।
लै लो कलेवा
बरत दुपुरिया, लगत ततुरिया।
ऊसई में आ गई, ना मानो जिया
लै लो कलेवा

खेतों में या अन्य जगह कार्यरत पति की अवस्था को देखकर पत्नी काफी दुखी है और कहती हैः–

पिया कलेवा भोजन कर लो, थोड़े समय रुक लो और अपने शरीर को देखो, दोपहर बढ़ रही है धूप बहुत तेज लग रही है, छाया में आ जाओ, इसीलिए मैं आपके पास भोजन लेकर आ गई क्योंकि मेरा मन नहीं माना।

इतना सब होते हुए प्रदर्शित करता है कि पति पत्नी एक दूसरे को कितना चाहते हैं। जब खेत में बीज बोए जाते हैं, उस समय काफी श्रमिकों की आवश्यकता होती है। श्रमिक पुरुष और औरतें भी कार्य करते हुए गीत गाती हैं। उस वक्त भी अपने भविष्य का ख्याल रखते हुए, गीतों में अपनी भावनाओं को शामिल करते हैं और कहती हैं कि हमारी इच्छा है कि मालिक के खेत में अधिक से अधिक अन्न पैदा हो ताकि उन्हें ज्यादा से ज्यादा मजदूरी मिले, अनाज मिले, और उनका समय और भोजन दोनों अधिक मिले यथाः–

अरे रामा हो, ऊचें से सेमरा उगमगें
फूले हैं, लाल गुलाब।
कौन बरन बाकी बौड़िया
कौन बरन फूल होय।
अरे रामा हो, हरद वरन बाकी बोडिया
लाल बरन फूल होय
को जो फुलवा बीनन चले
बाबुल चुनर रन्गाय
रामा हो, पवन चले पुरवैया हो।

जब खेत में फसल तैयार हो जाती है, उस समय भी स्त्रियां खेत काटते समय, विभिन्न प्रकार के गीत गाती है। उनकी मन्शा व आशा होती है कि उनके परिश्रम का फल उन्हें उचित उपलब्ध हो। उस समय औरतें यह गाना गाती हैं।ः–

दिन डूबे के धरा रई लम्बी मान्ग
किसानो भैया, बेरा तौ भई है घर जावे की।
धालो धालो रे धरम के दो–दो हाथ
बहरा/बेरा(समय) तो भई है घर जाने की
कठोइरा ने कसक ना जानी मोरे जियरा की।

इसके अलावा हर जाति में कुछ ऐसे रीति रिवाज हैं जो एक समान है, विशेषकर लड़कियों के लिए है। साथ ही दिशाशूल, अन्धविश्वास और अन्य प्रकार के उत्सवों पर तरह–तरह के नियम कानून है जिनको करना आवश्यक माना जाता है। फिर भी पढ़े लिखे लोग इनको अनावश्यक बताकर छोड़ कर जा रहे हैं, लेकिन जब आवश्यकता पड़ती

है या हताशा में, निराशा में, असफलता में, तो शगुन के तौर पर ही सही इन रीति–रिवाजों को अवश्य मानते हैं। अन्धविश्वासों में, चाहे उसमें थोड़ी बहुत क्यों न बदलाव कर दिए, मानने लगते है।

बुन्देलखण्ड विनीता पेज 23, 71–81,